❀ श्री सद्‌गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ❀

❀ श्रीमिथिला विहारिणी विहारिणौ विजयतेतराम् ❀

❀ श्रीमन्मारुत नन्दनाय नमः ❀

❀ सर्वेश्वर्यै श्री मत्यै चन्द्रकलायै नमः ❀

❀ सर्वेश्वर्यै श्रीमैत्यै चारुशीलायै नमः ❀

श्री मिथिला मधुर विलास

संकलनकर्ता—

श्री वैदेही वल्लभशरण जी

प्रकाशक :—

महान्त-श्री जगदीश जी महाराज तथा
श्री वैदेही वल्लभ शरण जी

विक्रमीय सम्वत् २०५२ सन् १९९६ बसन्त पंचमी

प्रथम संस्करण १००० प्रति] [न्यौछावर ३०/-

प्रकाशक :—

महान्त—श्री जगदीश जी महाराज तथा

श्री वैदेही वल्लभशरण जी

विक्रमीय सम्वत् २०५२, सन १९९६ बसंत पञ्चमी

प्रथम संस्करण १००० प्रति

न्यौछावर ३०/—

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान :—

१— श्री हनुमानबाग, श्री वासुदेवघाट
श्रीअयोध्याजी (उ० प्र०)

२— श्री वैदेहीशरण श्री अवध वस्त्रालय
निकट तुलसी उद्यान, नयाघाट अयोध्या

३-- श्री रसमोद कुञ्ज
ऋणमोचनघाट, श्रीअयोध्याजी

४— श्री तपेश्वर जी पुजारी श्री जानकी महल
श्री जनकपुर धाम (विहार)

५— श्री महन्त अनन्तराम जी
श्री रामानन्द आश्रम दुलहा भगवान श्रीजनकपुर धाम

मुद्रक :— मनीराम प्रिंटिंग प्रेस शास्त्रीनगर अयोध्या

❀ श्री सीतारामाभ्यां नमः ❀

* दो शब्द *

बड़े हर्ष की बात है कि श्रीपूज्य नाम, रूप, लीला, धाम, श्री युगल मन रञ्जन लाल जू की नित्य लीला में लीन रहने वाले श्री वैदेहीवल्लभ शरण जी श्री हनुमान बाग श्री अयोध्या जी, के अथक परिश्रम से श्री मिथिला मधुर बिलास, प्रेमी सन्त भक्तों के समक्ष प्रस्तुत है। श्री महाराज जी की बहुत दिनों से यह अभिलाषा थी कि श्री किशोरी जी के प्राकट्य से लेकर बाललीला, विवाह विदाई पुनः श्री मिथिला जी आगमन और श्री युगल सरकार का श्री मिथिला जी में नित्य विहार, नित्य उत्सव मधुर मय विस्तार से बर्णन हो जिसमें ऐसा एक ग्रन्थ श्री युगल सरकार की कृपा से प्रेमी भक्तों के लिये तैयार होता तो प्रेमियों को एक विशेष रस सम्पत्ति प्राप्त होती। सो श्री सन्त सद्गुरुओं की, श्रीयुगल सरकार की दया से आज यह ग्रन्थ तैयार हुआ। इसमें श्री किशोरी जी का प्राकट्य, बाललीला, श्री विश्वामित्र जी का श्री अवध आगमन, पुनः श्री रामलाल जी एवं श्री लषनलाल जी को लेकर यज्ञ रक्षा, श्री मिथिला जी पधारना, श्री मिथिलेश जी महाराज का स्वागत, नगर दर्शन फुलवारी, धनुष यज्ञ, श्री अयोध्या जी दूत भेजना, श्री चक्रवर्ती जी महाराज का बरात लेकर श्री

मिथिला जी पधारना, श्री विदेह जी का अगवानी सत्कार वर्णन, जनवासा में चारों भाइयों के विवाह का विचार विमर्श, निर्णय, विवाह प्रकरण, कलेवा, चौठारी, कोहवर, रहस्य, होली, आदि का प्रकरण विस्तार पूर्वक है। इससे रसिक प्रेमीजनों को आनन्द वर्धन होता रहेगा।

श्री कौशिल्या अम्बा जी श्री सुनयना अम्बा जी का मिलन, विदाई, वरात का अवध आगमन, परिछन, श्री चक्रवर्ती जी महाराज का श्री मिथिला जी पत्र भेजना, श्री लक्ष्मी निधि भइया जी का श्री अवध आगमन, श्री किशोरी जी का मिथिला आगमन, श्री किशोरी जी की श्री अम्बा जीं से वार्ता, श्री विदेह जी महाराज का श्री अवध पत्र भेजना, श्री सरकार एवं श्री लषनलाल जी का श्री मिथिला जी आगमन, स्वागत, होली, झूला, रास, षट ऋतु विहार आदि बर्णन, श्री मिथिला जी में शाली, सरहजों के साथ हास्य विनोद, श्री विदेह जी महाराज एवं श्री सुनयना अम्बा जी का श्री सरकार का दुलार, प्यार, गोप कुमारियों का पत्र श्री अवध से श्री मिथिला जी सुग्गी का लाना। श्री भरतलाल जी का श्री मिथिला जी आगमन, श्री चारो भाइयों का श्री मिथिला जी में अनेक प्रकार के हास्य बिनोद आदि वर्णन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में अनन्तानन्त विभूषित परमाचार्य रसिक सम्राट श्री श्री १००८ श्रीमद् स्वामि अग्रदेवाचार्य जी महाराज कृत ध्यान मञ्जरी से, श्री सूर किशोर जी महाराज

श्री जानकी महल जनकपुर धाम कृत श्री मिथिलाबिलास से, श्रीमद् गोस्वामि तुलसीदास जी महाराज कृत ग्रन्थों से, श्री कृपानिबास जी महाराज कृत श्री जानकी जन्म खंड से, श्री युगलप्रिया जी कृत श्री सिंगार रस रहस्य दीपिका से, श्री जनकराज किशोरी शरण जी महाराज (श्री रसिकअली जी) कृत श्री मिथिलानिवास से, श्री रामप्रिया शरण जी महाराज कृत श्री सीतायन जी से, श्री रसरङ्गमणी जी कृत श्री जानकी जशावली से, पूज्य श्री युगलानन्य शरण जी महाराज कृत श्री जानकी सनेह हुलास से श्री रघुराजसिंह जी कृत श्री राम स्वयंवर से, श्री नवलसिंह जी कृत श्री जानकी जन्म खण्ड से, श्री मिथिला बिवाह खंड से श्री जयरामदेव जी कृत श्री जानकी अवतार ग्रन्थ से, श्री रामनाथ प्रधान जी कृत राम कलेवा से, श्री बाल अली कृत नेह प्रकाश से श्री राम-सनेहीदास जी महाराज कृत श्री जानकी चरितामृत से श्री वसुनायक जी श्री सियारामशरण जी महाराज (श्री गुधरौली) कृत ग्रन्थों से श्री विदेहजाशरण जी महाराज कृत युगल बिभू-तिका प्रकाशिका से श्री शत्रुहनशरण जी महाराज (श्री रसिकान्ति लता जू) कृत ग्रन्थों से श्री अवधकिशोर दास जी महाराज कृत ग्रन्थों से, बिवाह मिथिला खंड साकेत खंड परिकर्ण वना के दिये थे लिखकर श्री रामहर्षणदास जी महा-राज कृत प्रैम रामायण मिथिला खंड से, श्री मन्नारायणदास जी महाराज भक्तमालीं जी कृत ग्रन्थों से, और श्री पूर्वाचार्यो

के ग्रन्थों से संकलन कर क्रम बद्ध भावना मय ग्रन्थ तैयार किया गया है, जिसमें श्री किशोरी जी की मधुर लीलावों का विस्तार से वर्णन है। दूसरा विषय ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य में सहायक पूज्य श्री रामसनेहीदास जी महाराज (श्री लता जी) श्री वैदेही शरण जी (भाविक) श्री रामाधार दास जी (मधुकर) श्री रामबल्लभा शरण जी (वेदान्ती) सन्त सेवा निष्ठ, परोपकार परायण श्री रामभजनदास जी (मधुकर) आदि सन्तों ने अपने अकथनीय परिश्रम से प्रेस कापी लिखने की कृपा की, मुझ दीन से श्री महाराज जी ने प्रेस कापी संशोधन कराने की कृपा की खेद की बात यह है कि गुप्तार घाट में रहने के कारण मैं पूरी सेवा नहीं कर सका श्री सीता-रामीय सेवा मन्दिर (गुजराती मन्दिर) नजर बाग श्री अयोध्या के श्री राम जी दास महाराज (श्री सखा जी) ने प्रूफ शोधन कार्य सम्पन्न किया है श्री महाराज सभी सन्तों के विशेष आभारी हैं। आशा है इस ग्रन्थ रस को रसिक प्रेमी-जन अवलोकन कर विशेष आनन्द को प्राप्त होंगे। अतएव प्रातः स्मरणीय पूज्य चरण दिवंगत रसिकाचार्य स्वामी श्री शत्रुहन शरण जी महाराज के श्री चरणों में हम सबों के कोटिशः नमन है। तच्चरण चञ्चरीक अवधेश वस्त्रालय वाले श्री वैदेही शरण जी (जानसठ) भी इस ग्रन्थ के प्रकाशन में असीम सहयोग के लिये धन्यवाद है। पुस्तक का समस्त कागज श्री राधेश्याम अग्रवाल गणेश पेपर डिट्रीब्यूटर वाले रिकाबगंज फैजाबाद से आया है। प्रूफ सोधन में जो त्रुटी हो गये हैं सो अशुद्धि-शुद्धि विवरण-पत्र कृपा कर सुधारलेंगे।

रसिक महानुभावों का लघु अनुचर

सियाराम शरण

* विषय सूची *

क्र०	विषय	पृष्ठाङ्क
१	मंगलाचरण	१
२	श्रीमिथिलाजी सप्त आबरण बर्णन	२
३	साकेत सुषमा	९
४	राजाओंका आगमन श्रीराम लालजीके जन्ममहोत्सवमें	१८
५	श्रीनारदजीका आगमन श्री चक्रबर्ती जी से वार्ता	१८
६	श्री मिथिलेश जी का विचार लाल जी को देख करके	२०
७	श्री मिथिलेश जी का सभा बुलाना मुनि मंडली को	२२
८	प्राकट्य के लिये यज्ञारम्भ ललिजू की प्रगट होना	२७
९	दम्पति का स्तुति करना	३०
१०	प्रगटकाल की स्तुति	३०
११	श्रीमिथिलेशजी ललीजी को लेकर अंतःपुर प्रवेश	३६
१२	पुर नारियों का भेट लेकर आना जन्मोत्सव में	३७
१३	छठी उत्सव	४३
१४	अथ बरही उत्सव, नाम-कर्ण	४८
१५	बालविनोद लली जू के	५४
१६	श्रीनारद जी का आगमन हस्थ, चरण, रेखा देखना	५४
१७	श्रीशंकरजी का तांत्रिक रूप में आगमन	५६
१८	श्री चन्द्रकला जी का प्राकट्य	५७
१९	श्री किशोरी जू का प्रेम	५९
२०	श्रीचारुशिलाजीकाप्राकट्य	६०
२१	वाल विनोद	६१
२२	अन्नप्रासन विधि	६२
२३	बाल विनोद	६५
२४	बाल लीला	६६
२५	श्री माता जी के साथ भोजन करना	६७
२६	श्री पिताजीके साथ श्री लली जू का भोजन करना	७४
२७	एक समय श्याम गौर चन्द्रकलाजू बिवाहोत्सव	७८
२८	विवाहलीला विग्रह मूर्ति दोनों बहिन रचना	७९

क्र०	विषय	पृष्ठाङ्क
२९	श्री लली जी का विद्या पढ़ना	८३
३०	सब बहिनों का सिंगार	८४
३१	श्री लली जू का सिंगार	८४
३२	बाल लीला	८४
३३	बागविहार समाज सहित	८५
३४	श्री चुरिहारिन लीला	८६
३५	श्री पटविन लीला	८८
३६	श्री कमला जी में बसंत उत्सव, नौक विहार	८९
३७	अथ कौतुकागार लीला	९२
३८	श्री लली जू का गान विद्या सीखना	९३
३९	श्री कमला स्नान सब बहिनों सहित	९४
४०	श्री लली जू का झूला उत्सव	९५
४१	श्रीब्रह्माजी का पिचकारी बेचने लाना	९६
४२	पिचकारी लीला	९९
४३	श्री लली जू की मुरली लीला	१००
४४	श्री लक्ष्मी निधि चारों भाइयों का विवाह	१०१
४५	श्री दुलहा सिंगार	१०२
४६	श्रीपिताजी का सिंगार	१०३
४७	जेवनार	१०४
४८	श्रीनारदजी का आगमन हस्तरेखा देखना	१०७
४९	श्री किशोरी जू का विरह	१०८
५०	श्री सरकार को प्रगट करने के लिये श्रीचन्द्रकला जू को रास रचना	१०९
५१	सुग्गीको श्रीअवध भेजना	११३
५२	सुग्गी पत्र लेकर श्री अयोध्याजी शीघ्र आना	११३
५३	श्री दम्पत्ति का ललीजू के विवाह हेतु चर्चा चलाना	११५
५४	श्री धनुष पूजन ललीजू का जाना बहिनिनसहित	११५
५५	श्री जनकजी श्रीशंकर जी का ध्यान करना	११७
५६	ध्यान में धनुष भंग के लिये प्रतिज्ञा	११७
५७	सभा में विवाह चर्चा चलाना	११८
५८	ऋषियों और राजाओं को सूचना	१२१

क्र०	विषय	पृष्ठाङ्क
५९	श्री शंकर जी का श्री विश्वामित्रजी को स्वप्न देना	११९
६०	श्री दशरथ जी का सब पुरजनको बुला के विवाह की चर्चा चलाना	१२०
६१	श्री विश्वामित्र जी का आगमन	१२२
६२	श्री माता जी से विदा मागना	१२५
६३	मुनिजी का यज्ञ प्रारम्भ	१२८
६४	श्री विश्वामित्र जी श्री सरकार का वार्तालाप	१३०
६५	श्री अहिल्या उद्धार	१३२
६६	श्री जनकपुर प्रवेश	१३४
६७	श्री विश्वामित्र जी श्री मिथिलेशजी का मिलन	१३७
६८	नगर दर्शन	१४१
६९	धनुषशाला की शोभा वर्णन	१६०
७०	दोनों भाइयों का श्री गुरु जी के पास आना	१६३
७१	फुलवारी प्रकरण	१६४
७२	श्री गिरिजा जी का वरदान देना	१९५

क्र०	विषय	पृष्ठाङ्क
७३	श्री मिथिलेश जी को रंगभूमि में बुलाना	२००
७४	श्री किशोरी जी का आगमन	२०१
७५	श्रीरानियों का आगमन	२०२
७६	श्री विश्वामित्र श्रीसतानन्द सम्बाद	२०२
७७	श्री मिथिलेश जी का प्रण सुनाना	२०९
७८	श्री विश्वामित्र जी की धनुष तोड़ने की आज्ञा	२१७
७९	धनुष भंग	२२५
८०	श्री किशोरी जी का जयमाल पहिनाना	२२८
८१	श्री मिथिलेश जी श्री विश्वामित्रजीं की वार्ता	२३२
८२	श्री मिथिलेश जी का मन्त्रियों को आदेश— नगर रचना, मार्ग का प्रबन्ध,मंडपकी सजावट	२३३
८३	दूतों का अवधपुर पहुंचना	२४१
८४	श्री दशरथ जी और दूतों से वार्ता	२४३

क्र०	विषय	पृष्ठाङ्क
८५	श्री सतानन्द जी का सत्कार	२४५
८६	पुरनारियों की आपस में वार्ता	२५१
८७	वरातका क्रमशः चलना	२५५
८८	श्री सरयू पुलिन पर प्रथम निवास	२६१
८९	पुनः वरात का चलना	२६४
९०	वरात का मिथिलापुर पहुंचना	२७०
९१	अगवानी की सजावट लेने को जाना	२७१
९२	दोनों ओर का परस्पर मिलना	२७४
९३	जनवासे पर आना	२८०
९४	श्री विश्वामित्र जी का जनवासे पर दशरथ जी दोनों भाई का सामना आगमन	२८४
९५	चारों भाइयों का परस्पर मिलना	२८६
९६	दोनों भाइयों का श्री माताजीके पास जाना	२८७
९७	श्री लक्ष्मी निधि भइया का श्री कौशिल्या अम्बा जी से मिलन	२९१
९८	विवाहकी लगन सोधना	२९[illegible]
९९	फल दान पठाना	३०[illegible]
१००	फलदान तिलक चढ़ावन	३०७
१०१	तेल चढ़ावन	३०८
१०२	गौदान, मंडप रचना	३०९
१०३	श्री कमला पूजन	३११
१०४	श्री रामलला नहछू	३१२
१०५	नहछू श्रीकिशोरीजीका	३१६
१०६	दूलह सिंगार	३१९
१०७	श्री चक्रवर्ती जी का सिंगार	३२१
१०८	वरात का चलना	३२२
१०९	पुरनारियोंका परिछन	३२८
११०	द्वार पूजा	३३२
१११	समधी समधीसे मिलन मंडप गमन दूलह के	३३९
११२	श्री किशोरी जी आना अम्बा जी को बुलाना चरन प्रक्षालन, देव-पूजन	३४४
११३	शाखोच्चार	३४७
११४	पाणिग्रहण, कन्यादान, भाँवरी	३५१

११४ तीनों भाइयों का विवाह ३५५
११५ राजाओं की कन्याओं का कन्यादान ३५६
११६ कोहबर परिकरण ३५९
११७ सातो सरहजोंके नाम ३७९
११८ हास्य विनोद, श्रीदशरथजी के बराति सहित जेवनार ३९५
११९ चौठारी की होरी ४०४
१२० श्री चक्रवर्ती जी की होली ४१५
१२१ श्रीराम कलेवा ४१६
१२२ दूसरे दिन का कलेऊ ४२१
१२३ श्री सिद्धि सदन में श्रीराम कलेवा ४२२
१२४ विवाह के बाद श्री कौशिल्या अम्बा जी श्री सुनयना अम्बाजी से मिलन ४३६
१२५ बिदाई प्रकरणके चारो भाई को जाना ४४४
१२६ श्रीकौशिल्यादि माताओं का अयोध्या जी में आना ४७१
१२७ बरातियों का पुर में प्रवेश अयोध्याजी में ४७६
१२८ श्री कौशला जी चारो दुलहा दुलही परिछन करना, श्री किशोरीजी आदि बहनोंका भोजन बनाना ४९०
१२९ चारो दूलहा दुलहिनों को महल देना ४९३
१३० श्री सुनयना अम्बा जी का प्रेम ४९७
१३१ श्री लक्ष्मी निधि जी का आगमन ५१०
१३२ श्री किशोरी जी आदि बहिनोंका श्री मिथिला जी आगमन ५२४
१३३ श्री कौशिल्या जी श्री चक्रवर्ती जो वार्ता ५३१
१३४ श्री सरकार का श्री मिथिला जी आगमन ५४०
१३५ श्री युगल सरकार की प्रेममय वार्ता ५४९
१३६ अष्टयाम ५७१
१३७ षट्रितु विहार ५७८
१३८ श्रीप्रिया प्रीतम जू की वार्ता, भरत जी को आना ५९०
१३९ श्री मिथिला जी का वर्णन ६०३
१४० श्री मिथिला विलास श्री सुरकिशोरदास जी महाराज की ६०७
१४१ श्री जानकी मधुर षोड्सी ६२३

❋ अशुद्धि शुद्धि पत्र ❋

पृ.सं.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१४	सरिस	सरित
४	२१	महिमबृषम	महिषिबृषभ
५	३	लोमाई	लोभाई
५	२०	सुलिकललक	सुतिलक
७	१२	वरम	परम
१०	७	अपरिकर	सपरिकर
१३	१५	जावों	जीवों
१७	१२	नम	मम
१९	५	से वेषिकेके	को देखिके
१९	२०	सुभासिष	सुआशिस
२०	८	विवारि	विचारि
२५	१९	बरंबूहि	वरंब्रूहि
३२	५	मउन्जु	मंजु
३२	६	कउन्जु	कंजु
३३	५	सवैंश्वरी	सर्वेश्वरी
३३	९	छाई	जाई
३८	१६	छआही	छवही
३८	१९	लट्ट	लट्टू
४०	४	रिजाइ	रिझाइ
४०	६	किशोर	किशोरी
४०	६	नृत्यपति	नृत्यति
४१	५	मनिभय	मनिमय
४४	४	जाल	जल
४४	४	अहबाई	अन्हवाई
४६	४	गुन आय	गुन गाय
४७	४	किलोल	विलोकत
५५	९	पति पाई	पद जाई
५९	११	षोडश	षोडस
६१	९	धरनी	घरनी
६५	१	ललहिं	ललिहिं
६४	३	कृसरान्न	सुअन्न
६६	१२	धनि	धुनि
६८	१६	माँति	भाँति
७०	८	कलरखराति	कला करतीं सुखकारी
७०	२२	विलकि	किलकि
७१	१	नराधिय	नराधिप
७१	१८	माल	भाल
७४	१	मैले ढौले	मिली भली
७७	१७	अस्थिर	स्थिर
७८	१८	खेत	खेल
७८	१६	यक	चक
८०	३	मिविला	मिथिला
८०	१०	मुति	मुनि

पृ०	पँक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८०	१३	वामिन	वासिन
८३	१	वाकिा	वाटिका
८७	१५	अवसंस	अवतंस
८८	१०	ढिब	ढिग
९१	६	धरी	घरी
९५	१५	अलदेली	अलबेली
९७	१	भयख	भयऊ
१०३	८	रसपुत	रसयुत
१०३	११	सिमिर	सुमिरि
१०४	५	सुण	सूप
१०४	१०	समपि	समर्पि
१०६	१६	मोह	मेह
१०७	११	सुमहु	सुनहु
१०८	१	शाठा	शाखा
११०	२०	कृनज्ञ	कृतज्ञ
११०	२१	अबति	अमित
१११	१	श्वाम	श्याम
१११	२	पुति	पुनि
१११	१७	सिंहध्वनि	सिंह ठवनि
११२	४	नुर्महिं	तुर्महि
११२	१८	बहत	बहुत
११२	२१	कुंवषिन	कुंवरिन
११३	६	उधरि टुम	उघरि तुम
११४	२	रोग	रोम
११४	७	कान्तधाम	कान्तिधाम
११६	६	धसि	घसि
११७	३	सुधर	सुघर
११७	२०	कहुंरु	कहुँऊ
११७	२०	त्रिसल्य	त्रिकाल्य
११९	४	भवहि	भवनहि
१२१	५	सिगर	सिगरे
१२४	१२	मद	मन
१३१	७	नृणगण	नृपगण
१३१	९	घरन	धरन
१३२	१	भूरि	मूरि
१३२	६	धूप	धूम
१३६	१०	पीर	भीर
१३९	९	बिदहे	विदेह
१४३	१७	मुख	मष
१४४	१	सुन	सुत
१४४	११	तीरा	सारा
१४४	१९	सुनीना	सुनैना
१५०	२१	समूरे	समूह
१५१	१९	लह्यौ	लह्यो
१५८	१	राजकुमको	राजकुमार
१५८	२	ध्रम नाई	भूमि बनाई
१५८	३	निभिबँश	निमिवंश
१६५	१९	लखत	लावत
१६९	१८	जलकी	जालकी
१७२	१	पासे	यासे
१७२	१८	बिताई	विहाई
१७७	१९	फंज	कंज

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८९	११	जोहू	जूही
१९०	१	बिधन	बिघन
१९२	७	उधारी	उघारी
१९२	८	गढ़े	खड़े
१९४	६	स्नवस	स्वबस
१९७	१३	लाड़ाली	लाड़िली
१९८	४	बड़गनानी	बडि जानी
१९९	१३	लवलगि	अबलगि
२०९	४	नैदेद	नैवेद
२०९	५	ढ़ाठी	ठाढ़ी
२१०	१२	मुकृत	सुकृत
२१०	१६	सोहन	सोहत
२११	४	भके	भने
२१६	२	भाँयकहिमैंन घारो	भाथ कर में न धारौं
२१६	१०	सूर	सूर्य
२१७	१०	में	मेलै
२१७	१२	सुहावब	सुहावन
२१८	३	कंकद	कंकन
२१९	१८	दाय	दाप
२२०	७	मोल	भाल
२२१	२१	पहिरहैं	पहिरइहैं
२२४	१४	दमलि	दमकि
२२५	१७	दासा	दीसा
२३०	१	नअथोरी	अथोरी
२३०	१५	कुज	कंज
२३०	१८	दृगलजा	दृगलाजा
२३१	२	सबी	सखी
२३२	१२	कहँ	कहु
२३३	४	धरके	घरके
२३४	१	मूषित	भूषित
२३५	१	आयुध	आयसु
२४०	१०	घाटा	ठाटा
२४३	६	बिबभ्राता	दोउ भ्राता
२४४	७	गये	गई
२४४	१३	द्रतहिं	द्रुतहिं
२४४	१४	वत	भट
२४४	१९	बधुवर	बंधुबर
२४६	१५	तुति	स्तुति
२४८	२	नाना	नाता
२४९	४	निरुचय	निश्चय
२४९	६	भपा	भूपा
२५०	४	वलारू	बजारू
२५०	११	जूय	भूप
२५०	१३	कतहँ	कतहुँ
२५५	१२	मधवाना	मघवाना
२५५	१५	छपल	छयल
२५६	१	हम	हेम
२५६	३	ध्बसी	ध्वंसी
२५६	७	शत्रुजय	शत्रुंज्य
२५६	१२	स्पंदन	स्यंदन

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५७	३	स्पंदन	स्यंदन
२५८	१५	सुरजा	मुरजा
२६२	१	वितुलपतके	विपुलपताके
२६३	१२	मृगभाल	मृगमाल
२६३	१३	सर्षय	सर्पय
२६६	१६	सुलम	सुलभ
२६८	१४	अवधेघा	अवधेसा
२६८	२२	राजकुक्कार	राजकुमार
२६९	८	बिपेह	विदेह
२७०	२	गरजः	गइ जब
२७०	८	बिये	किये
२७१	७	सुकुमार	सुकुमारी
२७२	१	घृति	धृति
२७३	१९	तुतंता	तुरंता
२७७	१४	धुलाई	बुलाई
२७९	१	ह्रासविासा	हासविलासा
२८०	१	मिथिलापधि	मिथिलाधिप
२८१	६	प्रभु	भू
२८१	१४	तीनपास	तुमपास
२८६	१९	भुष	भूप
२८७	३	कीशिक	कौशिकै
२८७	८		पोस
२८७	११	तन	तब
२८८	१	कठित	कठिन
२९०	१५	माक्यो	माच्यो
२९२	८	ममाजा	समाजा
२९२	२१	भुजारा	भुआरा
२९४	४	मिविलापति	मिथिलापति
२९४	१६	मुसाहिब धनिबादा	सुसाहिब धनबादा
२९८	१३	लोसू	लोगू
२९९	४	बणिष्ठ	वशिष्ठ
३००	५	स्पंदन	स्यंदन
३०१	११	शुयरा	सुयस
३०४	८	कांज	कंज
३०५	३	राम	राउ
३०५	६	मधवान	मधवाना
३०५	२०	अनहन	अगहन
३०७	७	उभगहीं	उमगहीं
३१०	१३	खंख	खंभ
३११	१५	ततु गुफित	तंतु गुँफित
३१२	१३	देवकोक	देवलोक
३१२	२१	सुअरध	सुअरघ
३१४	७	कति	अति
३१७	१९	दामिनि	यामिनि
३१९	१०	ब्रह्मदासथैल	ब्रह्मदारुथल
३१९	१६	सवाद	संबाद
३२०	१९	सलक	सकल
३२१	१२	चेले	चले
३२४	४	ननसप्त	नवसप्त
३२८	८	अनुबिधु उजिअरी	जनुबिधु उजियारी

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२८	११	ध्नरि धरि	धीर धरि
३२८	२०	सुअँमगलहारी	अमंगल हारी
३३०	१२	गुरुवश घोरिन	रघवर घोरन
३३६	४	रिपुसून	रिपुसूदन
३३७	६	आर्ध्य	अर्घ
३३९	३	भोगा	भोमा
३३९	७	सुभोगे	सुभागे
३४०	१९	पदेउ	पढ़ेउ
३४०	२०	अरध	अरघ
३४१	६	सुगंधन	सुगंधन
३४१	११	अरध भजनन	अरघ भाजतन
३४१	१९	दगन	दृगन
३४२	६	रथ छिवाई	रथछुवाई
३४४	३	खौरी	खौर
३४४	२०	पुरु	गुरु
३४७	२	घारी	धारी
३५५	५	सुदासना	शुदर्शना
३५८	५	मारे	हमारे
३५८	१६	समबली	समपली
३५९	९	लौहौं	लगइहौं
३६०	१२	कछ	कछु
३६५	९	इलह	दूलह
३६८	२	निज	निजदेवी
३६९	१३	जनक	कनक
३६९	२१	गगे	गये
३७०	४	चेतक	चेटक
३७१	५	यथा	जुवा
३७२	१	लाडनि	लाड़िलि
३७२	६	बोर	वोर
३७३	५	सिश्वावन	सिखावन
३७३	१२	सबावन	खवावन
३७३	१३	धुंधट	घुंघट
३७४	१	घरिलई	धरिलई
३७४	४	बाहु	खाहु
३७४	१४	उवलोकि	अवलोकि
३७५	१५	अघर	अधर
३७६	१३	घरी	धरी
३७७	११	भाकति	ताकति
३७७	१४	मुसुस्याति	मुसुक्याति
३७८	४	हे	है
३७९	२०	उठाइ	उढ़ाइ
३८०	५	महाला	मराला
३८०	१३	केतल	केवल
३८३	१२	पर्यक	पर्यंक
३८३	२०	भज्जन	मज्जन
३९३	२	सुघासे	सुधासे
३९३	४	जेनन	जेवन
३९९	४	वाबी	बाती
४०१	७	गाँढ़	गाँठ
४०२	९	गाँढ़ी	गाँठी
४०७	२	उड़ी	उठी

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०७	१८	ललकोरे	ललकारें
४१४	१६	मरि	भरि
४१६	६	राम	राज
४१६	११	राम	राज
४१६	२०	जाह	जहँ
४१७	१४	मुख	सुख
४१७	१६	श्रिभङ्गी	त्रिभंगी
४१७	१८	मोर	मौर
४१८	४	झलकैंमपन	अलकैंमदन
४१८	१०	नवधन	नवघन
४१८	२०	बिजापठ	विजायठ
४१८	२२	सदकादि	सनकादि
४१६	५	मामे	नामें
४१६	१२	सुनन	सुनत
४२२	२	तबे	तव
४२४	२०	सुनीश संगलाजी	मुनीश संगलागी
४२५	१३	बधी	बँधी
४२५	१७	यसिन	ऋसिन
४२६	३	तुमने	तुम न
४२६	६	करो	करौं
४२६	४	तह	तहँ
४३२	११	सीत	सित
४३२	१६	तीसपरदान	तिस परदान
४३२	१७	सख	रव
४३३	१४	मत्त्र	मन्त्र
४३५	७	जोवक	जावक
४३५	८	कोप-२	कोपर
४३५	६	कजलाजति	कज्जलअति
४३५	२०	विजसेवा	निज सेवा
४३६	१६	मुतसम	सुतसम
४४४	२२	तुतर	तुरत
४५०	१८	धापनो	थापनो
४५१	१	सीते	सी तैं
४५२	२	पावई	पवाई
४५७	३	मियिला	मिथिला
४५८	१२	अचर्य	आश्चर्य
४५६	१२	विचोरि	बिचार
४५६	१६	सुल	कुल
४६२	५	कुभकेतुहिं	कुशकेतुहि
४६२	१४	युरनारि	पुरनारि
४६३	१३	सुगन	सगुन
४६५	६	क्षमेड	छमेउ
४६८	८	गुणगान	गुणगाथ
४६६	१८	परिछत	परिछन
४७०	११	मियिला	मिथिला
४७०	११	रोवस	रोवहि
४७३	१२	गुहग	ग्रहण
४७३	१८	कदेव	कदंब
४७७	१२	मदवति	मदबंति

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	७	महामीर	महाभीर
४७९	१	उतारिस खीजन	उतारि सखीजन
४८०	१०	ललनी	जननी
४८२	८	अर्ध्य	अर्घ
४८७	१२	नखानी	बखानी
४९१	१९	प्रबल मणीदिब्यं	प्रवाल मणि दिय
४९२	१२	मियिलेन्द्र	मिथिलेन्द्र
४९३	१	नव रतन बुझना	न बरनत आवा
४९३	२	जीना	जीवा
४९६	९	सुधी	सूँघि
४९८	९	अवधन्य	अवध या
४९८	११	लखहु	लावहु
५०१	४	झँकी	झाँकी
५०१	८	पुरतृन	पुर तिन
५०२	१	लोजधूरि	लोटतधुरि
५०२	२०	वरराति	बतराति
५०७	१५	वियजुत	विनययुत
५०९	१४	पये अधरा	ये अधरा
५१०	१३	बपुआहा	पहं जहुँ
५१२	३	पवमानंद	परमानन्द
५१४	४	भूरि	मूरि
५१६	१२	ढुवाय	डुबाय
५१६	१४	विभूइति	विसूरति
५२०	१५	विरहि	विहरहिं
५२०	७	गतमुक्ता	गजमुक्ता
५२४	७	विलहि	विमलहि करि
५२५	१६	सुरी	जुरी
५३१	९	दसर	दशरथ
५३३	५	कुमामो	कुमारी
५३५	३	रिद्धि	सिद्धि
५३५	६	नप्रीनी	नबीनी
५३६	४	असिमाथा	असिभाथा
५४१	७	समाग	सुभाग
५४४	५	उभोहे	उछाहैं
५४५	१२	करिकर	कटि कर
५४७	१९	रीतो	रीति
५४८	८	अझबाद	अहलाद
५४८	१०	सन्मायो	सन्मान्यो
५४८	१६	प्रयक	प्रयंक
५४९	७	पखेसर	पर बेसर
५४९	१३	क्षण क्षम	छण छण
५५१	१७	जोवन	जीवन
५५१	२०	ढ़िढाई	रिझाइ
५५३	१	पुलिन	पुलक
५५३	६	अजोर	जाकोनहि
५५४	१८	परजकअक	परजंक अंक
५६०	३	लिखावन	लिवावन

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६२	२१	जीगी	जोगी
५६६	३	व्यंजन	व्यजन
५६७	३	कलभाष	कलमाष
५६८	५	भजन	भंजन
५६९	४	मुहाये	सुहाये
५७०	५	स्वार	द्वार
५७१	३	बिलविये	बिलमिये
५७१	१०	पयकेन	पयफेन
५७५	३	कीरि	कीर
५७७	१०	होढ़ीनरति	होड़ीनटति
५७८	१	अयत	अयन
५७८	२	सयत	सयन
५७८	१३	वरबीर	
५७९	९	करणिन	वरणि न
५८४	४	अबहि	आवहि
५८५	२	विमन	विभुषन
५८५	९	अलकै अलकै	अलकैं अलकैं
५८७	१	भार	मार
५८७	१७	जनइ	जननी
५८८	४	धोरी	घोरी
५८८	११	रावव	राघव
५८८	१३	पंजर	पिंजर
५८८	१६	प्रतिबिबं	प्रतिबिंब
५९२	१४	तिपन	तियन
५९२	१६	त्मौ	त्यौं
५९३	२०	दूध	दो
५९६	२१	निनप्रति	दिन प्रति
५९७	४	मुभ	शुभ
५९७	१३	सुध्पावत	सुध्यावत
५९९	११	ससुझि	समुझि
५९९	१३	सेज	सेन
५९९	१६	पत्तिन	पाँतिन
६००	२०	धन	घन
६०१	१३	बलन	बचन
६०३	९	अबिधा कठकर	अविद्या कटककर
६०३	१९	मंच रंग	पंच रंग
६०७	४	वणि	वाणि
६११	५	प्रही	प्रती
६१७	१८	मौन	भौन
६१९	१८	चटै	चढ़ै
६२३	१३	मुकुर मधुरा:	मुकुरं मधुरम्

॥ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ॥

卐 मंगलाचरण 卐

दोहा—श्रीमद्‌रामानन्द गुरु, स्वयं राम भगवान।
नमो नित्य श्री पद--पदुम, देहु युगल बरदान॥
सहचरि श्री सर्वेश्वरी, चन्द्रकला सिय प्रान।
अग्राचारज बपु धरयो, महि मंडल पै आन॥
भाव भेद सम्बन्ध वर, प्रगटे सुचि रसकन्द।
अवगाहन सिय यस सुधा, रसिकन हित सुखवृन्द॥
सर्वोपरि सिय यश रसिक, सिय--सिय पीय उदार।
बन्दौं पुनि--पुनि अग्र श्री, रसिकन रस दातार॥
तव पद-पदुम पराग तजि, और ठौर नहिं मोर।
हरहु मोह तम शीश धरि, हिय महँ होय अँजोर॥
बन्दौं श्री मन्मारुती, चरन विशोक महान।
सजल नयन कर जोरि सिय, रामकथा कर पान॥
सिय दुलार वर बपु धरुयो, भक्त सुखद हित काम।
युगल चरित पीयूष निधि, मगन होत वसु याम॥
युगल नाम सेवा सुयश, गान निरत मति जासु।
सिय सहचरि परिकर युगल वन्दौं पद रज तासु॥
जिनकी कृपा कटाक्ष सों, सूझै युगल विहार।
युगल ललन घूमत फिरै, तिन पीछे मनहार॥

॥ सोरठा ॥

सुमिरत मिथिला नाम, हटत अविद्या कटक कर ।
भूमि तिलक अभिराम, जहँ प्रगटी सिय लाड़िली ॥
ध्यान धरत मन मोद, कंचन वन कमला सरित ।
नित्य विलास विनोद, भूमि सकल मणि काँचनी ॥
जहाँ वसत निमि वंश वर, सदा एक रस रूप ।
उचित अवस्था देखिये, लीला कलित अनूप ॥
सीरध्वज नृप राज वर, जनक राय जेहि नाम ।
भये विदेही नेह वस, मूरति निरखत श्याम ॥

श्रीमिथिलाजी सप्त आवरण वर्णन

सप्त कोट चहुँ ओर सुहाये । नगर मध्य अति सुभग बनाये ॥
कलस कँगूरे ध्वजा पताके । अगनित सुन्दर नवरंग जाके ॥
अगनित द्वार बीर चहुँ ओरा । ठाढ़े सुन्दर नवल किशोरा ॥
भूषन वसन सुअंग सँवारे । धनुष आदि आयुध सब धारे ॥
द्वार द्वार प्रति नौवत बाजे । अमित सुसाज संग सुख साजे ॥
सप्त कोट के बाहर सुन्दर । सोहत चहुँदिशि चारि सरिस वर ॥
प्रथम कोट नव खंड ऊँचाई । तेहि भीतर मनि भूमि सुहाई ॥
तहँ चहुँ ओर सुषोडस भूधर । नाम कहों जानव धातू कर ॥
दूसर कोट खँड ऊँचो दस । तेहि भीतर जो भूमि चहुँ दिस ॥
तहाँ महाँवन खोडस सुन्दर । जानब नाम कहौं वस्तू कर ॥

ग्यारह खंड ऊँच दुर्ग तीसर। चहुँ दिसि कनक भूमि तेहि भीतर
तहँ सुद्रन के भवन सुहाये। तामें जाति अनेक गनाये ॥
चौथ कोट द्वादस खँड ऊँचा। तेहि भीतर मधि भूमि सुनीचा॥
तहँ वयसन के भवन मनोहर। चहुँदिशि बने मनिन के सुन्दर॥
तेरह खंड ऊँच द्रुग पंचम। तेहि भीतर मनि भूमि मनोरम ॥
तहँ बजार चहुँ ओर सुचारी। वरनि न जाहि देखि मन हारी॥
चौक पचीस बजार मँझारी। चौबिस चहुँदिशि एक मधिभारी
चारहु मध्य भिन्न यहि भाँती। सोभा अमित वरनि नहिं जाती
चौदह खंड ऊँच दुर्ग षष्टम। तेहि भीतर अवनी सुन्दर सम ॥
तहँ छत्रिन के लसत अगारा। चहुँदिसि मनिमय सुभग अपारा
ऊँचो दस अरु पाँच सुखंडा। सप्त दुर्ग लषि हेहु अखंडा ॥
तेहि भीतर भू अति विस्तारा। तहँ ब्राह्मन के बने अगारा ॥
सप्त कोट तामे चहुँ ओरैं। बाहेर कंचन बनचित चोरैं ॥
तामधि सरिता चहुँदिसि चारी। अति पावनि बह सुन्दर वारी
मनि सोपान कमल षग भृँगा। नाव जहाज चलहिं बहु रंगा॥
पूरब दिशि सोभित श्रीकमला। दक्षिन दिसा विमल छवि विमला
पश्चिम श्रीलक्ष्मणा सुहाई। उत्तर दूध मति मन भाई ॥
अब सुनु सातहु कोट की रचना। देखत बनै न आवै बचना ॥
ध्वजा पताक बहु कलस कँगूरे। चित्र विचित्र बने अतिरुरे ॥
बाहेर प्रथम कोट में सुन्दर। चहुँदिसि सोभित द्वार अमित वरै
सोरह खंड नभ लसति ऊँचाई। प्रति द्वारे नौबत धुनि छाई ॥
एक एक अक्षोहिनि वीरा। प्रति द्वारे चहुँदिसि रन धीरा ॥

सजग खड़े आयुध सब साजिक । धनुष बान असितोप सु आदिक ॥
बसन विभूषन मनिमय धारे । नव किशोर मन मथ छवि हारे ॥
द्वारपाल सिंगार सँवारे । ठाढ़े कनक छडी कर धारे ॥
कुलिश कपाट लगे प्रति द्वारे । दुर्गम कल से जाहि उघारे ॥
सिय पिय चरित्त के चित्र अपारे । नवरंग मनि रचि कोट सँवारे ॥
कोट के बाहर कछुक दूरि पर । चहुँ दिसि चारि बजार मनोहर ॥
चहुँदिसि की सब वस्तु सुहाई । भिन्न चहुँ दिसि विकतसु आई ॥
तहँ ब्रह्मा को मन्दिर सोहैं । अति सुन्दर अनूप मन मोहैं ॥
उत्तर रमाकेलि बन सुन्दर । तहँ बद्रीनारायन मन्दिर ॥
दोहा :-यहि विधि चहुँ दिसि दुर्ग के, बाहेर की छवि जोह ।
कंचन बन सरिहाट वर, देवालय गिरि सोह ॥
कोट के भीतर पुनि जो भूमी । तहँ जल नहरि चहूँ दिसि घूमी ॥
अमित नहर कमला से आई । महल महल प्रति लगी सुहाई ॥
बाग कलप तरु की दुहुँ तट पर । मनि सोपान स्वच्छ जलसुन्दर ॥
विविध रंग के पत्र फूलफल । दुहु तट डारि झुकी परसत जल ॥
बेदी बंगले कुँज बहु सुन्दर । तीर तीर देवन के मन्दिर ॥
विविध भाँति के चिरियाँ सुन्दर। बोलत कलरव मधुर मनोहर ॥
कुमुद कमल फूले बहु रंगा । गुँजत कलरव मंजुल भृंगा ॥
पूरब दिसि गजसाल बनो है । अगनित पीलबान गजसो है ।
दक्षिन दिसि हयसाल सुहाये । हय रंग जाति अनुगवहु छाये ॥
पश्चिम महिम वृषम गोसाला । अमित अनुग सेवहिं सब काला ।
तामधि यक यक सरसु मनोहर। चहुँ दिसि लगि वाटिका सुन्दर ॥

विविध जाति की फूल किआरी । नव रंग मनी सो बनी संवारी
तामधि छुटत सुगंध फुहारे । यक सत दुइ सत धार हजारे ।।
ऋतु बसंत नित रही लोमाई । सोभा अमित बरनि नहि जाई ।।
षोडस सर अब कहौं बखानी । नाम वस्तु से लेवसु जानी ।।
तिन्ह परवत पर यक यक तरुवर । छत्राकार विसाल मनोहर ।।
यक यक मंडप तिन्ह वृक्षन तर । बरनि न जाय बनाव मनोहर ।।
यक सौ आठ द्वार प्रति मंडप । खंम सहस अनुपम प्रतिमंडप ।।
ध्वजा पताक कलस मनि जाला । फरस वितान सुवंदन माला ।।
एक एक सिंहासन मंडप प्रति । चतुर खंड के सोह सुभग अति ।।
ता मधि कुंज अनेक बनाये । कुंज कुँज प्रति पलँग विछाये ।।
तहँ विदेहजा दूलह विहरैं । अलिगन सहित महासुख भरैं ।।
दोहा-तेहि भीतर जो भूमि नव, चहुँ दिसि अति विस्तार ।
षोडस भ्रातन्ह के तहँ, भिन्न भिन्न आगार ।।
चहुँ दिसि चारि मध्य रचना । देखत बनै न आवै बचना ।।
अपर कुँज चहुँ ओर सुअगनित । जूथेस्वरि तहँ बसत अलि-
नजुत ।।
पंचम मध्य लक्ष दल सुन्दर । मध्य करनिका सोह मनोहर ।।
मध्य व्याह को माडव कुँजा । बरनि न जाय नवल छवि पुंजा ।।
नवल सिंगार अमित सखि कीन्हे । चहुँ दिसि खड़ी सुसेवा लीन्हे ।।
दोहा-चित्रकूट वृन्दा विपिन, पर नारायन धाम ।
मिथिलापुर चौथा वरनि, भूमि सुलिक ललक ललाम ।।
जनक राय अरु रानि सुनयना । शोभा खानि महा सुख अयना ।।

जगत विदित जिनकी प्रभुताई। दम्पति को यश वेद न गाई॥
तिरहुत देश जनकपुर धामा। तहँ दम्पति राजत अभिरामा॥
धर्मपाल सबही विधि साधू। सीय चरण अनुराग अगाधू॥
धर्मराज नय अरु परमारथ। कोउ न जनक सम जान जथारथ
ब्रह्म विचार निपुन महिपाला। निजानन्द में रह सब काला।
जिनकी महिमा वरहि न जाई। श्रुति पुराण सब बहुबिधि गाई
सतचित आनन्दधाम जनकपुर।जेहिध्यावत विधिहरिहर सबसुर
मणि मय भूमि धाम सब सोहे। रचना सकल मुनिन मन मोहे
हय गज रथ संकुल सब काला। अमित मृगन की राजत माला
कोउ चतुर्दिशि उपवन राजे। ऋतु वसन्त तहँ निशिदिन भ्राजे
फुलन भार ते डार भूमिगत। मनहु पथिक हित अति उदारमत
विविध कुसुम वृक्षावलिसोहे। छूटि सुगन्ध दिशानके पोहे॥
नगर नारि नर अति छवि खानी। जाहि सिहात रमा ब्रह्मानी॥
सब सुधर्म सब नीति परायन। निशिदिन पढ़त रहत सीतायन
कोइ कहुँ पक्षी ललित पढ़ावें। विमल सियायश नितहि सिषावें
जनकलली कहु जनक दुलारी। रानि सुनयना की अति प्यारी
बहुरि कहहु छबिनिधि गुणखानी। चन्द्रमुखी दामिनि दुतिहानी
कहु लाड़िली पद्म इव लोचनि। प्रीति सागरी शोच विमोचनि
अलवेली पुनि राजकुमारी। कहु निमि कुल की पावनिकारी॥

दोहा

अस कोऊ नहिं तहँ देखियत, मणि भूषण जेहि नाहिं।
नखशिष सब मनहरण छबि, लखि रति काम लजाहिं॥

कल्प वृक्षनहिं देखिये, अस मन्दिर कोउ नाहि।
घर-घर कामद गाय हैं, पूरण सुख दरशाहिं॥
असनर नर नारी कोउ नहीं जो न करत अचार।
सब सुधर्म में चलत हैं, क्षण क्षण विमल विचार॥
श्री कमला जहँ बहति हैं, अतिहिं विमल वर वारि।
ब्रह्मादिक सुर चकित हैं, देखि विभूति अपारि॥
रत्न मणिन के घाट सब, बँधी महा छबि देत।
कमल चर्तुविधि सोहअति, उड़त भ्रमर रस लेत॥
अमित नाव बहु मणिन की, जरित महा छबि ऐन।
ध्यज पताक युतलसत सो, किमि कहे वैन अनैन॥
डोरि लाल अरु श्वेत शुचि, हरित नील अरु पीत।
केवट कामहुँ ते अधिक, सुन्दर वरम विनीत॥
किंकिनि कलरव करत हैं, डांड़िन लसत अनूप।
को कबि छबि तेहि कहि सके, जेहि पर विहरत भूप॥
जल कुक्कुट अरु हंस बहु, मीन लसत जल माँहँ।
घाट उपर अति मन हरण, कल्प वृक्ष की छाँह॥
अमित निकेतन ते लसत, कमला पुलिन अनूप।
फिरत चतुर्दिशि नारि नर, सब रति काम सरूप॥
राज दुन्दुभी बजत हैं, राजद्वार छवि अयन।
धन्य सो नर अरुनारि है, जे निरखत भरि नयन॥
भूप भीढ़ निशि दिन रहत, राज महल के द्वार।
मागध बन्दी नर अमित, विरद करत उच्चार॥

अमित बजाज सराफ के, लसत दुकान अपार।
वस्तु विना गथ पाइये, देत न लावत वार ॥
अस कोउ नहिं जो धन हरत, पक्की जुक्ति बनाइ।
बरु आपन निधि देते हैं, जो चाहे सो पाइ ॥
देश देश की वस्तु सब, देश देश के लोग।
तिनकी अमित दो कान हैं, सब विधि वरणो जोग ॥

चौपाई

सब विधिपुरी मनोहर दरसे। सकल सिद्धि प्रद तेहि जो परसे।
तहाँ जनक बहु भाइ सहीता। करत राज सु अखंड पुनीता ॥
सब दिशिके ऋषि नायक आवहिं। देषिपुरी विरागविसरावहिं।
करहिं जनक नृप सो संवादा।वचनामृत सुनि-सुनि अहलादा॥
सब ऋषि मुनि सत संगति पाई।तृप्ति होइ पुनि करहि बड़ाई।
अमित दान दिन प्रति नृप देहीं। सादर विप्र बन्दी जन लेहीं॥
जनकरायकी प्रिय महारानी। नाम सुनयना छबि गुणखानी।
सुवृति अनपति वर्तन माहीं। जनक रानि सम दूसर नाहीं ॥
पति अनुकूल सदा रहती हैं। जोइ अज्ञा सेवा गहती हैं।
परम मनोहर चरित अपारा। करति सुनयना महल मझारा॥
बहु रानिन में ई पटरानी। शोभा तेज शील गुण खानी।
धर्मराज नय जानति नीके। निज छबि निदरति रुपरती के॥
अमित सहेली सेवा करहीं। व्यजन चारु चामर शिर धरहीं।
षट ऋतु कुंज अनेक महल में। अमित किंकरी रहति टहलमें॥

दोहा—योगन भोगन में रहत, राय रानि निर्लेप।
दम्पति कथा विचित्र है, कहेउँ बहुत संक्षेप।।

卐 साकेत सुषमा 卐

जहँ अनन्त ब्रह्माण्ड को विभव लजावनि हार।
येक येक तहँ देखिये, वस्तु अनेक प्रकार।।
सत चित आनन्द रूप सब, ब्रह्मा विष्णु शिव ध्यान।
उमा रमा शारद शची, निशि दिन करति बखान।।
जहाँ नवल प्रीतम प्रिया, निशि दिन करत विहार।
षट ऋतु की जहँ कुँज बहु, रचना विविध प्रकार।।
सकल विमल चिन्मय अकल, परमानन्द सुख रूप।
नव रंग मणिमय लसत सों, सब आतमा सरूप।।
सकल कामना हीन ह्वै, रहे सदा आनन्द।
यह सुख तब उर आवई, जब छूटे सब छन्द।।
विमल भक्ति जब उर बसे, सिय की आर्शीवाद।
तब शक्ती अहल्यादनी, हिय बसि कर अह्लाद।।
युगल रूप श्यामल गवर, करहि नयन गृह वास।
तव विहरे सिय महल में, सदा रहे पिय वास।।
दिव्य धाम साकेत सों, निज इच्छा तनु धारि।
प्रगटी जिमि सिय स्वामिनी, यथा देन फल चारि।।
सो प्रसंग वर्णन करूं युगल चरन सिर नाय।
कही कथा सिय जन्म जिन, सब मिलि होहु सहाय।।

छन्द–कलप–कलप प्रति भेद प्रभू बहु कारन करन लागी।
बैकुण्ठादिक प्रिया अवतरहिं प्रति–हित पागी।
श्री साकेताधीश प्रिया साकेत विहारी।
शरणागत सुख देन हेतु नित अवनि पधारी॥
युगलाकर्षण हेतु अन्य समरथ नहिं कोई।
स्वायम्भू,-मनु हैं प्रमाण अविदित नहिं सोई॥

श्रीयुगलसरकार के अवतार का हेतु श्रीकिशोरीजी की करुणा

एक समय साकेत धाम अभिराम राम अपरिकर।
सिंहासन आसीन सीय--सिय पिय सुषमाकर॥
कोटि काम रति मदन मान जनु कमल दिवाकर।
दृष्टि मात्र अघ हरण शरण करुणा बरसाकर॥
सेवा में संलग्न सहचरी अष्ट प्रधाना।
निज–निज परिकर सहित रूप की रासि महाना॥
कोऊ कर छत्र शुभ्राज कोऊकर व्यंजन ललामा।
चँवर काहु कर काहु मोर छल कर अजिरामा॥

दो०-कृपा दृष्टि आकस्मिकी, मृत्यु लोक महँ जाय।
कृपा मयी के मुख कमल, दियो आसु कुम्हलाय॥
प्राण प्रिया प्राणेश्वरी, को मुख चन्द मलीन।
सहज सच्चिदानन्द निधि, निरुपम कृपा अधीन॥
अकस्मात् लखि मुख कमल, प्यारी को कछु म्लान।
सहजानन्द प्रदान रत, बोले जीवन प्रान॥

(श्री प्रीतम वचन)

हे करुणामयि बल्लभे, क्यों मुख भयो मलीन।
जासु अंसजा सक्ति जग, थिति जन्मान्त प्रवीन ॥
यदि हम सों ही हो सके, यह तव चिन्ता दूरि।
कहहु तुरत प्राणेश्वरी, हे मम जीवन मूरि ॥
नहिं समर्थ मैं आपका, देखन को मुख–चन्द।
अप्रसन्न इस भाँति नित, वरषण परमानन्द ॥

(श्री प्रिया वचन)

हे प्राण प्रिय आजु मम, सहज दृष्टि नरलोक।
सोइ दशा दयनीय लखि, भई हृदय प्रद--सोक ॥
सुनहिं ताहि एकाग्र मन, हे मम जीवन प्रान।
युक्ति निवारण की करैं, जो मम सुख सुख मान ॥

चौपाई--हम दोनों के सम तनु पाये।
दोनों के ही अंश कहाये ॥
माया बस जग रूप लुभाने।
सत को असत असत सतमाने ॥
साधन धाम द्वार मुक्ती का।
हर चोरासी लख भुक्ती का ॥
कृपालभ्य लहि यह नर देही।
भये कुविषयानन्द सनेही ॥
किन्तु यथेष्ट न ताकहुँ पावहिं।
समय चूकि सिर धुनि पछितावहिं ॥

जेहि सुख का कछुहूँ नहिं ज्ञाना ।
किमि तेहि पावहिं वे प्रिय प्राना ।।
मुक्त बद्ध दोऊ मोहिं समाना ।
भोग भेद लखि मुख कुम्हि लाना ।।
प्यारी की सुनि यह हित बानी ।
कृपा द्रवित बोले प्रिय बानी ।।

(श्री प्रीतम बचन)

दो०-जीवों का दुःख दूरि कर, सुखी बनावन हेतु ।
युग--युग में अवतार हरि, विविध रूप सों लेत ।।
मुनियन सन करवायऊँ, आगम निगम पुरान ।
उपनिषद् स्मृति संहिता, सहित प्रचार महान ।।
चौपाई–माया मय जग को समुझाई ।
विषयानन्दहिं तुच्छ बताई ।।
सुख के मार्ग कोटि दरसाये ।
दयामयी तिन्ह महँ मन भाये ।।
मृत्यु लोक प्राणिन मंगल हित ।
मैंने नहिं कीन्हें उपाय मित ।।
यथा शक्ति निज मति अनुसारा ।
प्रिये दोष तब कहा हमारा ।।

(श्री प्रिया बचन)

सुनि पिय गिरा प्रेम युत सत्वर ।
बोली प्रिया लोक हित तत्पर ।।

सत्य कहेहु पिय नहिं सन्देहू ।
माया मोह करी सत एहू ॥
जो ज्ञानिन को मोह करावै ।
अज्ञानिन की कहा बसावै ॥
वाही माया के भरमाये ।
गहि असार निज प्यार भुलाये ॥

दो०--वहुत काल सों जीव ये, दिव्य धाम सुख लीन ।
किमि प्रत्यक्ष विहाय के, हों यहि सुख मति दीन ॥
उनहिं देन हित दिव्य सुख, हम दोउ नर लोक ।
इसी दिव्य वपु सों चलें, करन अवस्य विसोक ॥
निज ऐश्वर्य छिपाय के, घुल मिलि सबहीं माहिं ।
मंगलमय निज चरित सों, दें यह सुख सब काहिं ॥

चौपाई–सर्वजीव सुख दायक बानी ।
प्यारी की पिय सुनि सुख मानी ॥

(श्री प्रीतम बचन)

जोवों के प्रति रोस दिखावत ।
बोले पुनि निज भाव जनावत ॥
हम इनके संग खेलन चहहीं ।
दिये पीठ ये मम दिसि रहहीं ॥
छन–छन मम अपराध कमावहिं ।
जानतहूँ भय नेक न लावहिं ॥
मम अतुष्टि कर कर्महिं करहीं ।

जे हठ बस ते किमि उद्धरहीं ॥

कहेहु सीय वात्सल्य अगाधा ।
लखहि मातु पितु शिशु अपराधा ॥
पितु ऐश्वर्य देखि किमु डरहीं ।
बालक निज रुचि नहि आचरहीं ॥
सब क्रीड़ा सुखदायक होई ।
सिसु की तिन्हहिं जान सब कोई ॥

दोहा—इनके अवगुन हेरिके, प्राप्त निठुरता भाव ।
परित्याग करि दुर्दसा, देखि दया उर लाव ॥
सर्वजीव अनुकम्पिनी, प्यारी के सुनि बैन ।
चतुर सिरोमनि लाड़िले, बोले पुनि सुख ऐन ॥

चौपाई—प्राण प्रिये ! जो कीन्ह विचारा ।
वामें कछु सन्देह हमारा ॥
तासु निवारन पहिले कीजै ।
पुनि यथेष्ट निज सम्मति दीजै ॥
अज अचिन्त्य आदिक बहुनामा ।
वेद भनित जानहि मुनि ग्रामा ॥
जो अवतार भूमि हम लइहैं ।
झूठे वे सबही होइ जइहैं ॥
नाम असत्य सिद्ध जब होइहैं ।
कैसेहु वेदहु सत्य कहइहैं ॥
श्रुति असत्यता सिधि जग मंगल ।

करिहैं का कहिये विचारि भल ॥

यह सुनि तर्क युक्ति युत वानी ।
बोलीं प्रिया प्रेम रस सानी ।
गुन स्वरूप नव गावत हारे ।
हम दोउन के वेद विचारे ॥

दोहा—नेति–नेति कहि तब भये, प्रेम मगन चहुँसोय ।
इद मित्थं निर्णय बिना दिये, झूठ किमि होय ॥

(श्री प्रीतम बचन)

चौपाई--प्रिया बचन चातुर्य निहारी ।
बोले पुनि जन आनन्द कारी ॥
सरणागत रक्षा हित प्यारी ।
मुख्य प्रतिज्ञा अहइ हमारी ॥
तदपि मोरि यदि सरण न आवैं ।
कहा दोष मम आप बतावैं ॥
सुनि पिय बचन प्रिया मुसकानी ।
बोली गिरा परम हित मानी ॥
जबलों हृदय अपेक्षा कोई ।
दया भाव कछु सिद्ध न होई ॥
नहिं उदारताहू तब कोई ।
तबलों सिद्ध प्राण प्रिय होई ॥
मातु पिता सन सावक कवहीं ।
तब हम अहहिं कहत का नवहीं ॥

का हित उनकर तवहुँ भूलहिं ।
हरहिं न वे निज भरसक सूलहिं ॥

छन्द--भरसक न का सिसु हरनि सूलहिं ताहि कबहुँ भुलावहीं।
गुनवंत नाहिं बनाय अवगुन देखि खेद बढ़ावहीं ॥
प्रतिकूल लखि कर कोप का अनुकूल नाहिं बनावहीं ।
पितु मातु लावन योग्यता नहिं यतन करहिं करावहीं ॥

दोहा--जब झूठे पितु--मातु का, इस प्रकार व्यवहार ।
साँचेन का किमि चाहिए, तबसों करिय विचार ॥

चौपाई--जे दम्पति हम दोउ हित लागी ।
कीन्हेउ अनुपम तब अनुरागी ॥
विधि हरि हरहू लोभ कराई ।
सके जिन्हहिं नहिं सो महि आई ॥
स्वायम्भुव मनु दसरथ रूपा ।
प्रगटे आइ अवध नर भूपा ॥
सतरूपा तिन्ह की महरानी ।
कौसल्या यहि जन्म बखानी ॥
उन्ह कर व्याह उनहिं संग भयऊ ।
दोउन का तीसर पन गयऊ ॥
जो वरदान उन्हहिं दे आये ।
पूर्व जन्म किमि ताहि भुलाये ॥
ब्रह्मादिक वाही आसा पर ।
युगलागमन प्रतीक्षा तत्पर ॥

सुत बनि उनके बर अनुसारा ।
भाव पूर्ति का करिय विचारा ।।

दोहा—मैं मिथिलाधिप राज के, यज्ञ वेदि सों आय ।
प्रगट होहुँगी प्राण प्रिय ! सह परिकर समुदाय ।।
सर्व जीव आनन्द प्रद, केवल चरित लखाइ ।
हम दोऊ अनुराग रस, सरिता देहिं बहाय ।।
जो सुख सुलभ न आजु लगि, भयो विधातहु हेतु ।
मिथिला अवध बहावहीं, ताहि प्रचुर रस लेत ।।
यह विधि बाद बिबाद वर, हारि सुपुलकित गात ।
प्यारे करुणानिधि प्रिया, सों बोले मृदु बात ।।
धन्य धन्य प्यारी कृपा, तब ऐसी निष्काम ।
नम हियहूँ जब यह नहीं, सम्भव पुनि केहि ठाम ।।
सर्व लोक कल्याण हित, यही कृपा तब एक ।
साधन परम अमोघ है, जानहिं कोऊ सविवेक ।।
हेतु रहित तब यह कृपा, मोहिं कीन्हेउ अधीन ।
पूर्ण स्वतन्त्र अजेय को, जीति सर्वहिं विधि लीन ।।
विस्वविमोहन मोहिं यह, कृपा विमोहेउ आज ।
जिमि विचार दीन्हेहु प्रिये ! तिमि होइहैं सब काज ।।

छन्द—होइहैं सबहिं विधि काज वै सहिं जस कहेहु करुणामयी ।
भावानुगामी मैं सदा तब बात यह नहिं कछु नयी ।।
अब सीघ्र ही हम लेहिंगे अवधेस गृह अवतारहीं ।
होइ आपहू मिथिलेस मख भू, प्रगट कार्य सम्हारहीं ।।

दोहा--युगल ललन संवाद सुनि, सुखद सुजन हित जानि।
युग परिकर बरषहिं सुमन, परमानन्द मन मानि ॥
बलिहारी लै दुहुँन की, पुनि--पुनि तन मन वारि।
पुनि पुनि सब सखि जयति जय, जयजय जयति उचारि॥

छन्द--सुनहिं सुजन जेहि हेतु भयउ नित सिय अवतारा।
तजि कुतर्क अनुपम विधान सो परम उदारा ॥
सर्वेश्वर अवधेश—सदन साकेत बिहारी।
प्रगट भये अंशन समेत, जब प्रभु अवतारी ॥
जन्म महोत्सव माहिं आपने चहुँ सुत वरके।
किय आमन्त्रित नृपति सकल महि मंडल भरके ॥

श्री सरकार के जन्म महोत्सव में श्री मिथिलेश आदि
राजाओं का आगमन

आकर सबहीं राज सभा महँ भूप विराजे।
महामुदित मन देखि शिशुन कों भूषण साजे ॥

॥ श्री नारद जी का आगमन ॥

परम भक्त देवर्षि सुवन ब्रह्मा के आये।
हरि गुन गावत अंग अंग पुलकावलि छाये ॥
देखि तिन्हैं श्री कोशलेन्द्र उठि कीन्ह दण्डवत्।
निज सिंहासन पर विठाइ पूजेउ पुनि विधिवत ॥
जोरि पानि कर विनय भाग्य निज भूरि बखानी।
सादर पूँछे हेतु आगमन नृप मृदु बानी ॥

उज्वल यश रघुलाल का, छाइ रहा भरपूर ।
भूलि भूलि भटकत फिरे, सकल देव मशहूर ॥८७॥
क्षीर सिंधु ढूँढ़त हरी, वर ढूँढ़त कैलाश ।
हंसहि ब्रह्मा ढूँढ़ते, तज्यो मिलन कै आश ॥८८॥
राहू खोजत चंद्रमहिं, ऐरावत सुरनाथ ।
यहि गति राम स्वरूप करि, उज्वल यश रघुनाथ ॥८९॥

॥चौपाई॥

जेहि द्युति रबि शशि जाहिं छिपाई । तहँ खद्योत प्रभा कस गाई ॥
अस विचारि भ्रम तजि बड़ ज्ञानी । राम रहस ध्यावत बनि ध्यानी ॥
राम रहस मुनि कहेउँ अखंडित । व्यास समास यथा मति मंडित ॥
राम चरित अस तजि केहि ध्यावै । जेहि बिनु जिव थिर नेक न पावै ॥
जे यह चरित करहिं उर पूजा । तिन समान त्रय लोक न दूजा ॥
तुम विज्ञान रूप मुनि राई । दीन्ह हमहिं सुख आश्रम आई ॥
बूझेहु राम रहस गुणकारी । भावन मुनि विरंचि त्रिपुरारि ॥
राम चरित जस देखन पायउँ । कहेउँ तोहिं नहिं नेक छिपायउँ ॥
राम रहस कर आदि न अंता । गावत सुर नर नाग प्रयंता ॥
राम सिया अवधी सुख गेहा । तब मम ऊपर करहिं सनेहा ॥

॥ दोहा ॥

करि करि सुमिरन रहस का, पुनि पुनि होत निहाल ।
राम सीय जय राम सिय, कहत प्रभंजन लाल ॥९०॥
सुनि हनुमत के बैन बर, देखि रहस रसपाग ।
घट सम्भव बोले हरषि, बिगत मोह भ्रमदाग ॥९१॥

॥ चौपाई ॥

अब कृत कृत्य भयउँ तव बैनन । नूतन प्रेम भयउ उर नैनन ॥
मोह सिंधु तुम ह्वै जल स्यंदन । मोहिं सुख दीन्ह पवन प्रिय नंदन ॥
तुम प्रभु कस न होहु उपकारी । जस गिरि तरु तस आप बिहारी ॥
तुम कृपालु तन मन मति संता । बंदौं पुनि पुनि पद हनुमंता ॥
करि पूजा कपि सुयश बखानी । लै उपदेश गयउ मुनि ज्ञानी ॥
राम रहस सोइ कहेउ सलोना । बिमल होहिं मन पिय श्रुत दोना ॥
सीता राम चरण मन लागहि । भव भ्रम नास भक्ति रस पागहि ॥
सब साधन द्रुम फूल समाना । राम रहस सुंदर अरघाना ॥

॥ दोहा ॥

रस श्रृंगार अनूप फल, मोहि जात सब कोइ ।
राम रूप रस माधुरी, पिय पिय तृप्त न होइ ॥९२॥
सो कुलवंत पुनीत सुत, परम पूज्य गुणधाम ।
जे जन रघुबर राम रस, मगन रहत सब याम ॥९३॥
यहि बिधि रहस अनूप कहँ, बरणि ब्यास सुखधाम ।
निज सुत कर संदेह हरि, कीन्ह बानि विश्राम ॥९४॥

॥ चौपाई ॥

यह शुकदेव ब्यास सम्बादू । सदा सुखद भ्रम समन प्रमादू ॥
मोहिं जस मति कछु परो बुझाई । भाषा बद्ध कीन्ह सुखदाई ॥
हैं परमोद तीन अरु चारी । लीला धाम रूप सुखकारी ॥
यहि महँ नाम ललित बिस्तारा । जेहि महिमा जग सकल पुकारा ॥
जो चह राम प्रेम उर अंतर । सो गावहिं यह चरित निरंतर ॥
मानत राम इष्ट जे अपने । ते यह रहस न त्यागत सपने ॥
राम सीय बिनु कृपा सहाई । रुचिर चरित मन दीन्ह न जाई ॥

दोहा—बड़ी कृपा इस दास पर, कीन्ह महामुनि राय ।
मम सुत जन्म सुपर्व पर, स्वयं पधारे आय ।।

।। श्री नारद बचन ।।

नाना विधि साधन करत, जो न होहिं हिय धीर ।
सो प्रभु नृप तब भवन बस, हरण भक्त भव पीर ।।
तप प्रभाव से वेषिके के राउर मुनि समुदाय ।
हम सबहीं अतिसय चकित सत्य सत्य नृप राय ।।
दर्शन हित आतुर हृदय हम आये तव पास ।
वेगि लाल जी को दिखा, सब पुरबहु चिर आस ।।

।। श्री चक्रवर्त्ती बचन ।।

तप प्रभाव प्रभु मम नहीं, यह है कृपा प्रभाव ।
आप सभी मुनि बरन के, मम मन निश्चय आय ।।

चौपाई--इमि प्रतोषि मुनि राजहिं राऊ ।
कहेउ सुमंतहिं रावल जाऊ ।।
चारहु शिशुन सपदि लै आवहु ।
मुनिवर पद स्पर्श करावहु ।।
सुनि आय सु सो सदन सिधाये ।
चारो तनय तुरत लै आये ।।
नृप मुनिवर पग शिशु सिर राख्यो ।
मीलित नैन देखि इमि भाखेऊ ।।
नाथ ! लाल मम करत प्रनामा ।
देहु सुभासिष पूरन कामा ।।

दर्शन हेतु बुलायहु जिन्हको ।
क्यों न बिलोकहु आयेहु तिन्हको ॥
मुनिहिं मौन बेसुध लखि सबको ।
बुड़ेउ मोद सिन्धु मन नृप को ॥
यहि प्रकार लखि सबहिं अधीरा ।
बोले मुनि निज मन करि थीरा ॥

॥ श्री देवर्षि वचन ॥

दोहा--पाइ असम्भव प्राप्ति सुख, केहि इमि दशा न होइ ।
जनि आश्चर्य भुलावहूँ, नृप विचारि उर सोइ ॥
बड़े लाल जी आपके, पूरण ब्रह्म परेस ।
ब्रह्म बन्द्य सेवक अनुज, इनके तीनो शेस ॥
चौपाई--इमि भूपहिं महिमा समुझाई ।
प्रभु की सादर आगम गाई ॥
पुनि प्रमुदित हरि हृदय लगाई ।
ब्रह्म लोक गवने मुनिराई ॥
सभा मध्य सुनि सो संवादा ।
नृप मुनि कर भव हरण विषादा ॥

॥ श्री मिथिलेश विचार ॥

श्री मिथिलाधिप अति अनुरागे ।
हृदय विचार करन अस लागे ॥
धन्य भाग भूपति अवधेसू ।
पद सम्राट सुपुत्र परेसू ॥

नृप वात्सल्य भाव सब पाई ।
जग कृतार्थ जीवन भये आई ।।
ये ही सब महँ मम मति पागी ।
धिग तेहि बिनु मम जन्म अभागी ।।
पितु, गुरु, श्वसुर, तीन अधिकारी ।
यहि सुख के मम मति अनुसारी ।।
सोरठा--पितु पद श्री अवधेश, श्री वशिष्ठ गुरु पद लहेऊ ।
रहेउ श्वसुर पद शेष, दायक मम वात्सल्य सुख ।।
चौपाई--सो पद प्राप्ति भाग्य महँ जाके ।
सर्वेश्वरी सुता हो जाके ।।
मम कन्या साधारण नाहीं ।
केहि विधि हम सुख पावहिं ताहीं ।।
सोचत इमि सो हृदय अधीरा ।
देश काल लखि पुनि भये धीरा ।।
समय पाइ प्रभु गोद बिठाई ।
नृप विदेह निज विनय सुनाई ।।
जब प्रभु आप लोक महँ आये ।
निज भक्तन के भाव बिकाये ।।
सुत सम्बन्ध कीन्ह स्वीकारा ।
करन हेतु सब अंगीकारा ।।
मम जामातृ भाव अपनाई ।
जीवन सफल करहु सुरराई ।।

कछु दिन रहि श्रीअवध नरेसू।
मिथिला गमन कीन्ह मिथिलेसू ॥

समाचार सब श्रवण करायो ।
रानिहि राउ न नेक दुरायो ॥

प्रात काल निज सभा प्रचारे।
पुलकित उर इमि बैन उचारे ॥

(श्री मिथिलेश जी का सभा बोलाना)

छन्द--चक्रवर्ति दशरथन सुवन जन्मोत्सव माहीं ।
गये रहे हम आप सभी से अविदित नाहीं ॥
उत्सव को आनन्द बरनि सक त्रिभुवन माहीं ।
मम बिचारि सामर्थ्य वान असकवि कोउ नाहीं ॥
नारद मुनि विधि तनय देव ऋषि सत्वर आये ।
चकित मुदित अवलोकि पूजि नृप विनय सुनाये ॥
बड़े भाग मम आजु आप जो स्वयं पधारे ॥
सफल मनोरथ करन हेतु सब भाँति हमारे ॥
तप प्रमाण अवलोकि चकित तव सब तप रासी ।
ध्यान अगोचर रमैं जासु गृह अज अविनासी ॥
लोचन गोचर दे कराइ तिन्ह को मम सत्वर ।
सफल मनोरथ करैं मोहिं जग जनक जनकवर ॥
सुनि परत्व आश्चर्य चकित नृप सुत कर राजा ।
दर्शन दियो कराइ मुनिहिं सह नृपति समाजा ॥
छवि समुद्र अवलोकि सकल भये प्रेम विभोर ।

ऋषि नरेश मोहिं सहित हृदय आनन्द अथोरा ।।
करि दर्शन देवर्षि मुदित विधि धाम सिधारे ।
सहसा तब उर उदित भाव अस भये हमारे ।।
चक्रवर्ति पदलोक ब्रह्म सुत भवन विराजे ।
बड़भागी अवधेश सुकृति मुद मंदिर भ्राजें ।।
कछुक दिवस रहि अवध मूक निज विनय सुनाई ।
आयेहु यहाँ बहोरि हृदय सर्वेश्वर लाई ।।
दोहा-नृप भोगी जेहि भाव सुख वाही मोहि सुहान ।
तासु प्राप्ति साधन बिना, मन मेरो समलान ।।
सोरठा--किमि पूरन यह होइ, आस मनोरथ प्रबल मम ।
करौं सुसाधन सोइ, परम हितैषी सुहृद जन ।।
दोहा-एतदर्थ मुनिवर सभी, मिथिला लेहिं बुलाइ ।
साधन निधि कछु अवसि वे, साधन देहिं बताइ ।।
चौपाई--मन्त्र नरेशहिं यह अति भायो ।
मुनिन बुलावन दूत पठायो ।।

(श्री आद्याशक्ति के प्राकट्य के लिए महर्षियों को बुलावा)

सुनि विदेह विनती मृदु बानी ।
दूतन सों मुनि गन सुख मानी ।।
सबहीं मिथिला धाम पधारे ।
कुम्भज रिषिवर संग सुखारे ।।
स्वागत कीन्ह दीन्ह सुख बासू ।
तिन्हहिं विदेह सुपरम हुलासू ।।

सेवाधीन भये मुनि झारी ।
अति प्रसन्न श्रम पन्थ बिसारी ।।
सतानन्द नृप विनय सुनाई ।
लाये सबहिं सभा नर राई ।।
वह शोभा नहिं वरणन जोगू ।
जानहिं ते जिन देखिय लोगू ।।
सभा द्वार पर भूपति ठाढ़े ।
दरशन आश पुलक तन बाढ़े ।।
मुनिन स्वयं अधिकार विचारी ।
लखि आसन आसीन सुखारी ।।
मिथिलेशहिं अगस्त्य तपखानी ।
निज ढिग बैठायो गहि पानी ।
सादर पुनि बोले मुनिराई ।
बहु विधि नृप की करत बड़ाई ।।
दोहा-ज्ञान सभा महँ आपकी, अनायास सुधि आइ ।
ज्ञान पराकाष्ठा सुमिरि, सबकी मति चकराइ ।।
कुशल क्षेम सो कोष पुर, राष्ट्र सहित परिवार ।
अन्तःपुर युत सुखी रहि, करत प्रजा पर प्यार ।।
केहि कारण नृप या समय सबहीं मुनि समुदाइ ।
एक साथ पठये बुला, निर्भय कहिय बुझाइ ।।
जन्म महोत्सव महँ गये, हमहूँ अवध मुनीस ।
अकस्मात आये तहाँ, नारद त्रिदश ऋषीश ।।

महिमा सुत अवधेश की, सुनि तिन सों मुनिराय ।
उनहिं जमाई भाव सों, पावन मन अकुलाय ॥
जब सर्वेश्वर ब्रह्म वे, दशरथ राज कुमार ।
ससुर तासु सर्वेश्वरी, सुता जासु निरधार ॥
आसु साध्य संसिद्धि प्रद, साधन जानब हेत ।
युगपत सबहिं बुलायऊ सम्प्रति कृपा निकेत ॥
सुनि विनती नृप मौन लखि, सबहिं हताश अधीर ।
भये देखि बोले बचन, कुम्भज अति गम्भीर ॥
प्रश्न कठिन दुर्लभ परम, नृपति मनोरथ जानि ।
हम सब भये विचार बस, भये कछुक अनुमानि ॥
जनि निरास हो नृपति इमि, सिद्ध हेतु निज आस ।
यतन सोचि वरणन करूँ, कीजै दृढ़ विश्वास ॥
आसु साध्य संसिद्धि प्रद, साधन हित नृप आप ।
शिवहिं प्रतोषहुँ तिन्ह कृपा मिटिहि सकल संताप ॥
यहि बिधि श्रीअगस्त्य नरनाथहिं। तोषि गये आश्रममुनि साथहिं।
श्री विदेहपुर पूरब जाई । हर हित उग्र तपहिं मन लाई ॥
पूरन भये जबहिं बसु बरषा। भयउ तबहिं शिव उर आकरसा॥
प्रगटे हर उर अहि लपटाये । चन्द्रमौलि तन भस्म लगाये ॥
बरंब्रूहि सुनि नृप मृदु बानी । करि प्रणाम बोले युत पानी ॥
मोर मनोरथ जानहु स्वामी । पुरबहु शीघ्र सो अन्तर्यामी ॥
सुनि नृप विनय देखि विकलाई । हरषे शिव बोले मुसकाई ॥
धीरज धरहु और कछु काला । सफल मनोरथ होहु भुआला ॥

जिन्हहिं लहेउ श्रीअवधेशनरेश। जिन्हहित आप विकलमिथिलेश
वही युगल सरकार हमारे। सीताराम प्राण सो प्यारे॥
एक समय साकेत मझारी। जीवों का कल्याण बिचारी॥
कीन्हेउ वर सम्बाद परस्पर। तिन्हँ महँ यह निर्णय श्रीसियकर॥
दोहा—आप अवध नृप के तनय, होहिं मही तल जाइ।
हम विदेह मख भूमि सो प्रगट होहिंगीं आइ॥
यज्ञ प्राप्ति हित कीजिये, यासों शीघ्र नरेश।
प्रगट होहिं सर्वेश्वरी, ध्रुब तासो मिथिलेश॥
जो सौभाग्य न आजु लगि काहुहिं मिलेहु भुवाल।
सुलभ न आगेहु होहिं सों, तुम्हहिं सुलभ यहि काल॥
असकहि अन्तर्हित हर भयऊ। तब महीप निज मन्दिर गयऊ॥
गुरु अनुशासन पाय सुनायो। जो वरदान सम्भु सन पायो॥
सुनि सो सभी हृदय हरषाने। जयजय कहि भूपति सनमाने॥
शतानन्द पद बंदि बहोरी। सकल सभा सदयुग कर जोरी॥
शीघ्र यज्ञ आरम्भन हेता। कीन्ह विनय अति प्रेम समेता॥
पुनि सब निजनिज भवनसिधाये। करि प्रनाम उर आनन्द छाये॥
शतानन्द निज आश्रम आई। शुभ मुहूर्त चिन्तत मनलाई॥
प्रात काल मख भूमि विशोधन। लखि मुहूर्त वर भये मगन मन॥
दिन मणि उदय पूर्व नृप गेहा। पहुँचे मुनिवर सहित सनेहा॥
प्रातकाल गुरु दरसन पाई। नृपति मगन मन महँ अधिकाई॥
शतानन्द बोले पुनि सादर। श्रवणामृत सम बचन मनोहर॥
आज मुहूर्त आसु फलदाई। यज्ञ भूमि शोधन शुभराई॥

दोहा–अति उत्तम तिथि पञ्चमी, सुकला माधव मास ।
इसी वर्ष एक बरस में सर्व सिद्धदा भास ।।

यात्रा आज पञ्चमी आशा । सकल पूरनी मन अभिलाषा ।।
सरि लक्ष्मणा पुनीत किनारे । होइ यज्ञ आदेश हमारे ।।
न्योतहु सकल मुनिन नृप सन्तन । द्विजवर सुहृद गुनीजन सज्जन ।।
पुनि विशिष्ट नृप बृन्द बुलावन । पठवहु निज मंत्रिन्हहिं धावन ।।
जाइ सुदर्शन अवध भुवालहिं । लावहिं रानिन सह चहु लालहिं ।।
सबके बास प्रथम बनवावैं । जहँ बसि सब–सब ऋतु सुख पावैं ।।

दोहा--जस आज्ञा प्रभु आपकी, वैसा ही सब होइ ।
अस कहि तेहि क्षण सचिब सब, बोलि बुझाये सोइ ।।

(प्राकट्य के लिये यज्ञारम्भ)

यज्ञ भूमि सजवाय सुहावन । तेहि महँ वेदि मध्य जग पावन ।।
कदली खम्भा वन्दनवारा । ध्वज पताक रचना बिस्तारा ।।
दर्शक वास बनावहु जाई । यथा उचित सब भाँति सुहाई ।।
ऋषि थल बाहर नगर बनाई । स्वागत साज धरौं सजवाई ।।
ऋषिन मुनिन कहु न्योत बुलावहु । विप्र साधु सनमान जिवावहु ।।
मंगल हेतु ललित बैदेही । दान मान प्रिय बचन सनेही ।।
अति सत्कार भूप सन पाये । असन सयन सब भाँति सुहाये ।।
भयो काज सब यथा निदेशू । देखि महा प्रमुदित मिथिलेशू ।।
आइ गये जबसब आमन्त्रित । मुनि हरि जन द्विज नृप गुनि पंडित
सबके दर्शन करत विदेहू । पहुँचे श्री कौशल पति गेहू ।।
चारों सुत भूपाल विलोकी । उर अधीरता सके न रोकी ।।

सावधान करि कोशल राया । सादर भूपहिं हृदय लगाया ।।
नृप विदेह बोले कर जोरी । सुनिय नाथ एक विनती मोरी ।।
यज्ञ भूमि अवलोकन कीजै । त्रुटि बुझाय हित परिचय दीजै ।।
सुनि यह विनय अवधपति तेहि छन।गुरु वशिष्ठ सहसुवनभूपगन
श्रीमिथिलापति क्रतु की रचना । जाइ देखि बोले मृदु बचना ।।
दोहा--राजन सब विधि शुद्ध यह, जनि कीजै सन्देह ।
यज्ञारम्भ सुकार्य हित, गवनहु गेह विदेह ।।
सकल ऋतुन महँ वर्य यह, अति पुनीत ऋतुराज ।
तामधि मासोत्तम अमल, माधव मास विराज ।।
कीन्ह यथाविधि शास्त्र निबेरी । चले भूमि शोधन शुभ बेरी।।
माधव सित शरतिथि गुरुवारहिं। करि विधिवत मंगलश्रृंगारहिं
कुल गुरुका शुभ पाइ निदेशू । रानी सहित विदेह नरेशू ।।
चले तहाँ सब सहित समाजा । सचिव विप्र भट परिजन राजा।।
यज्ञभूमि पहुँचे नृप ज्ञानी । सबहिं प्रनाम करत युत पानी ।।
आज्ञा लहि जब आसन राजे । बाजन लगे सुमंगल बाजे ।।
यज्ञारम्भ सर्व सम्मत से । सुरविलोकि लागे सुमन बरसे ।।
इन्द्रादिक आये सुरसर्वा । सेवा हेतु त्यागि निज गर्वा ।।
सुख समृद्धि यह विधि तहँ छाई।निज गृह सुधि सब गयेभुलाई
मिलिहि न याचक खोजेहु कोई । भोजन जो नृप रंकहिंसोई ।।
यहि विधि बरस बीति जब गयऊ।चिन्ताकुलभुवालमनभयऊ।।
शतानन्द सो तत्छन जानी । बोले वचन श्रवण सुख दानी ।।
वर वैशाष मास हित जानहु । परा सिद्धिदा नवमिहिंमानहु ।।

मिथिला वन कंचन की खानी । प्रगटी सिय प्रगटत जियजानी
मणिमय खानि गिरिन प्रगटानी।शृंगनविविध धातु दरसानी।।
ऋतु बसंत फूले बन बागा । गावहिं जानकि जस अनुरागा ।।
शीतल मन्द सुगन्ध समीरा । परसि करत सानन्द शरीरा ।।

दोहा-मही मृदुल मई अमल जल, विकसे कमल तड़ाग ।
धूम सहित पावक सिखा, ज्वलित जान बड़ भाग ।।

जड़ चेतन मय सब जग जीवा । सबै मगन मन होत अतीवा ।।
सन्त हृदय मन मोदित भयऊ। सो सुख जानहिं जेहिंहरिदयऊ
मगन विमल संकुल सुर वृन्दा ।गावहिं जानकि जस सानंदा।।
देव वधू नाचहिं गुनगाई । करत वेद धुनि मुनि समुदाई ।।
सबहिं मनहिं मन रस उपजावैं।सबहिं विलक्षणभावदिखावैं।।
शक्तिन युत विधि हरिहर देवा।बरसहिं सुमन करहिंसियसेवा।
दस दिसि देवहिं सगुन जनाई । फरकहिं अंग सुभग समुदाई ।।
सर्व दिसाँ मंगलमय भासे । वेदि अदृश्य स्व भूरि प्रकासे ।।
सब प्रकार मंगल सुखदाई । लखहु सिद्ध सूचक नरराई ।।
यहि विधि गुरु सो पाइ प्रतोषा।धरि केहुँ भाँति तीनदिन तोषा
नवमिहिं कहँ अति प्रेम अधीरा।अर्चन कीन्ह श्रवण दृग नीरा।।

दोहा-अर्पित करि पुष्प अञ्जलि, दम्पति सहित विदेहू ।
परा प्रेम हिय पुलकि तन, जोरि पानि ससनेहू ।।
करन लगे संस्तव विमल, जय सिय बल्लभ स्वामि ।
जय सर्वेश्वर बल्लभे, जय-जय जयति नमामि ।।

(अस्तुती-दम्पति प्रागट्य करते हैं)

छन्द—नमामि सर्ववत्सलामशेष लोक मङ्गलां ।
समस्तसौख्यदायिकां सदा दया विधायिकाम् ।।
न जीवदोषदर्शिनीं कृपासुधैक वर्षिणीं ।
कृपाकटाक्ष भाजनं करोतु सा हि माँजनम् ।।
नतोऽस्म्यतुल्य बैभवां परामसन्निभार्जवां ।
कृपाविधान विश्रुतां महामुनीन्द्रसंस्तुताम् ।।
सुखाकृतिं रसाकृतिं समस्त सौभगाकृतिं ।
करोतु सा प्रतिक्षणं मयि प्रसन्न वीक्षणम् ।।
प्रदाय चारुदर्शनं समस्तशोक नाशनं ।
महाप्रमोद वर्षणं नवं नवं प्रतिक्षणम् ।।
गुरूदितं हरोदितं तथा धरोद्भवोदितं ।
ऋतं वचो विधीयतां मयित्वयानुकम्प्यताम् ।।
अहैतुकी कृपानिधे धरादिकंक्षमाम्बुधे ।
प्रसीद मे प्रसीद मे प्रसीद शक्ति सत्तमे ।।
महारमादि वन्दिते पदाब्ज भक्ति देहि मे ।
क्षमोऽस्म्य सो दुर्मर्त्यक बिलाम्बमप्यतोऽधिकम् ।।
दोहा-परतम ब्रह्म अनादि श्री, सीता नाम उदार ।
सुनि स्तव तब मरव वेदि सों, प्रगटीं तेज पसार ।।

(प्रगट कालीन स्तुति)

भइ प्रगठ किशोरी, ससि सम गोरी, दिब्य वसन तन सारी ।
अनुपम शृंगारा, मणिमय हारा, नील कमल कर धारी ।।

अंग अंग मनोरम, कोटिन रबि सम, छायेउ दिब्य प्रकासा ।
भक्तन भव मोचन, ललित विलोचन, चन्द बदन मृदु हासा ।।
चम-चम द्यु ति वस्त्रा, परम पवित्रा, विद्यु त ज्योतिहु लाजै ।
अति दिब्य सुभूषण, सब निर्दूषण, कंकन किंकिन बाजै ।।
मणिमय सिंहासन, पै पद्मासन, राजति परम पुनीता ।
सिर छत्र सुलहरै, चमर सुफहरै, बसु सखि गावैं गीता ।।
जय रस रूपे, प्रेम स्वरूपे, महाभाव रसखानी ।
जय ब्रह्म स्वरूपे, आनन्द रूपे, कृपा स्वरूप महानी ।।
जय आनन्द बर्द्धिनि, प्रेम समृद्धिनि, जय–जय कर मुनि देवा।
सुमनांजलि बरषैं, अति हिय हरषैं, करैं बिबिध बिधिसेवा ।।
पितु जनक सुनैंना, मातु बनैंना, भनत कछुक मुख बानी ।
अभिलाष पुजावहु, दम्पति भावहु, वात्सल्य रस सानी ।।
अति सुखद सुशीला, करि शुभ शीला, पावन प्रेम प्रकासी ।
सुनि–सुनि बड़भागी, हीय अनुरागी, पावैं पद अविनासी ।।
दोहा-श्री साकेत विहारिणी, सत् चिद आनन्द सार ।
युगल प्रपन्नन हेतु निज, सिय श्यामा अवतार ।।
शुक्ल पक्ष बैशाष शुचि, नवमी तिथि सुखदाय ।
नखत पुष्य वर कर्क शुभ, लग्न भौम दिन आय ।।
मख वेदी मधि बसुधा विकसी । प्रथम प्रेममय प्रभा सुनिकसी।।
श्वेत छत्र पुनि छवि दरसानी । संग चँवर शोभा सरसानी ।।
मणिमय सोहत सुभग सिंहासम।कंचन रतन रचित तम नासन
अष्ट कमल दल ता महँ सोहै । मध्य कर्णिका भुवन विमोहै ।।

तेहि पर परतम ब्रह्म स्वरूपा । पिय स्वामिनि राजै श्री भूपा ॥
द्वादश बर्ष अवस्था शोभित । तनु शृंगार निरखि मन लोभित ॥
अरुणगौर तनतरणि लजावत।हेम तड़ित शतशशि छबिछावत॥
आनन आन न जेहि सम सोहै । सहजहिं राम श्याम मन मोहै ॥
दोहा-वरदायक वरदाने छबि, वरणत बनै न मउन्जु ।
अरुण अधर विहँसत मनहुँ, विकसित सुषमा कउन्जु ॥
नासा नासा भरण अनूपा । कल कपोल कुंडल रचि रूपा ।
तिमि कानन ताटंक सुहाये । सह सानन सन जाहिं न गाये ॥
कबरी केश रशेसहिं रंगा । चूड़ामणि सुचन्द्रिका संगा ।
बाल सुभाग सुहाग सुशाला । तिलक विन्दु सिन्दूर रसाला ॥
सब कहँ सौंह भौंह अति बंका । शरणागत कहँ करहिंअशंका॥
कृपा कलित कल कंज विलोचन।राम रसिक भक्तनभवमोचन
अंजन श्याम राम मन रंजन।लगे ललकि जनु आप निरंजन ॥
श्याम विन्दु छवि देत चिबुक पर।पियहियलोभबसेउजनुछविधर
बसन स्वयं पिय श्यामल रूपा।परसत तनु छबि छटा अनूपा ॥
पद पदांगुली मंगल खानी । नख सुखमा नहिं जाय बखानी ॥
लाल कमल सम पद तल प्यारे।रेख कंज आदिक उजियारे ॥
कल नूपुर कल धौत मणिन के।मदन मराल नवल जनु नीके॥
पंकज श्याम बाम कर सोहै । मुद्रा अभय दहिन मन मोहै ॥
नेति-नेति कहि थके चारि तेहि।षष्ट अष्टदश आदि गावजेहि॥
सत चित आनन्द कन्द समेता । परतम ब्रह्म रूप साकेता ॥
सीता नाम अनादि आजु सोइ ।भक्तन हित प्रगटी महिजाहोइ

दोहा-कोटि--कोटि शत चन्द्रहू, लाजै लखि मुख तासु ।
अमृत रस झर--झर झरै, बूँद सखी सब जासु ।।
अष्ट सखी सेवा करहिं, चँवर छत्र छबि सोह ।
विजन पान इत्रादि वर, लिए कृपा कर जोह ।।
सर्वैश्वरी श्रीचन्द्रकला अलि।सिय तद्रूप दिब्यगुनढलिभेलि।।
चारुशिला सुभगा अलबेली । हेमा क्षेमा नवल नवेली ।।
लक्षमणा सुखदा शीतल तर । गंधा पदुम बरारोहा वर ।।
सेवैं सिय स्वामिनी प्राण सम । रूप शील गुन आदि सबै छम।।
चकाचौंध सबके दृग छाई । तेज पुँज छवि वरणि न छाई ।।
जय-जय धुनि पूरी ब्रह्मण्डा । आनन्द उमड़ि डुबायो अंडा ।।
पुष्प माल झर-झर झरि बरषहिं।भूमि अकाशहिं तेमनकरषहिं
गंध वृष्टि बहु गगनहिं तेरे । होत हर्ष पगि प्रीति घनेरे ।।
दुँदुभि स्वर सुर करहिं सुखारी।भूमि ढोल बाजादिक भारी।।
वीणा वेणु मृदंग नगारे । बाजहिं शंख घड़ी करतारे ।।
किन्नर सिद्ध नाग गंधर्वा । रम्भादिक अप्सरा सुसर्वा ।।
नाचहिं गावहिं गगन मझारी।जयति जयति जय बचन उचारी
दोहा-ताही विधि शुचि भूमि महँ, पंच शव्द धुनि होय ।
नाग देव मुनि विप्र गण, स्तुति कर मुद भोय ।।
तापस सिद्ध संत योगेश्वर । विधि हरिहर ऋषि सुर देवेश्वर।।
समय जानि मिलि निकट बहोरी।करिएकसाथविनय करजोरी
जय अनन्त ब्रह्मांड निरूपिनि।जन प्रतिपालनकृपास्वरूपिनि।।
जय श्री सीता श्रुति जस गीता।हम बन्दहिं तब पद बहुप्रीता।।

जय श्रीसीता बीज निवासिनि। भजत भक्त भववीजबिनासिनि॥
तुही ब्रह्म प्रानिन में प्राना। तुही प्रान पति वेद प्रमाना॥
अगणित शैल सुता श्री बानी। जासु अंश जा शक्ति बखानी॥
जगत जननि तव विभव अनन्ता। हम सबकोऊ न पावहिंअंता॥
दोहा-तब गुण रूप प्रभाव सब, वेद अगोचर मात।
तुही न पावति अन्त निज, औरन की का बात॥
पुनि प्रसून वरषा झरि लाये। जय-जय कार करहिं हरषाये॥
जब करि कृपा स्वामिनीजी ने। दिव्य दृष्टि दम्पति कहँ दीने॥
तब यथेष्ट करि दरशन पाये। परमानन्द पुलकि तन छाये॥
तेजो मय सिय सखि युत लखि तिन। दम्पति भयउ विशेषदेहबिनु
परवश भये प्रेम सुधि हीना। पूर्व राग जनु तनु धरि लीना॥
मूर्छित भये परे महि माहीं। सीय शरण राखे तिन काहीं॥
उतरि सिंहासन सिय अतुराई। कर गहि भूपति रानि उठाई॥
कृपा पाय श्रीजनक भुआरा। हिय महँ माने मोद अपारा॥
देखि नृपति अति आनन्द पावा। निरखहिं एकटक रूपसुहावा॥
जोरि पाणि स्तुति अनुसारी। जय-जय जय सब जगतअधारी
ब्रह्मरूप अह्लादिनि रूपे। सब सुखदानि अनंद अनूपे॥
अर्चा व्यूह विभव भगवाना। अन्तर्यामी ब्रह्म सुजाना॥
शक्तिन युत विधि हरिहर देवा। तव विरचित बहुबिधिकरसेवा
कोउ नहि जानि सकै तब रूपा। कहि न सकै जस नाम अनूपा॥
महिमा तासु और को जानै। नेति-नेति जेहि वेद बखानै॥
सुता भाव सों पावन तिनको। अभिलाषहुँ शिवध्यावहितिनको

दोहा-रोम-रोम ब्रह्मांड शत, भासे जेहि तन सोइ ।
केहि प्रकार वात्सल्य सुख, प्राप्ति सुलभ मम होइ ।।
जो अभीष्ट सुख देन हित, मोहि प्रगट भई आइ ।
तो शिशु बपु धारण करिय, निज ऐश्वर्य छिपाइ ।।
बार-बार बर बिनय करि, चरण कमल परि भूप ।
कृपा सिय सत समुझि शुचि, मानहुँ आनन्द रूप ।।
पुनि उठाय अनन्य हिय जानी । अमृत कल्प भाषी सियबानी।।
सुनहु मात पितु वैन सुहावन । पूरब प्रेम पगेव मन भावन ।।
सुता भाव तब बहु विधि सेवा । कीन्हेसि प्रगट मोहिगुनलेवा।।
सत-सत सत्य मातु पितु मेरे । पुत्रि मानि पालिय निज नेरे ।।
देन प्रनीति रूप दरसायो । मुनि मन अगम नेति श्रुति गायो।।
बोले नृपति धन्य मैं भयऊ । तव पद रेनु शीश जो लयऊ ।।
मोहि सम भाग्यवंत कोउ नाहीं।निज मुखपिताकहेउमोहिकाहीं
देवि एक वर विनय हमारी।लखहिं ललित शिशु केलि तुम्हारी
विहरहु सदा मोर अँगनाई । रहौं निरखि अनुपम सुख छाई ।।
सोरठा-अस संस्तुति सुनि सिय, जग जननी परमेश्वरी ।
कल कोमल कमनीय, भई विमल बपु बालिका ।।
पितहिं प्रेम दीन्हेउ करि दाया । मुद माधुर्यमयी मुद माया ।।
परम ईश्वरी भाव भुलाई। पागे सुता प्रीति उर छाई ।।
तब सिंहासन के ढिग जाई । लियो ललकि सिय अंक उठाई ।।
देखि विवुध अतिसय अनुरागे । सुर प्रसून बरषा वन लागे ।।
मुनिवर जय-जय कार उचारैं । लखि छबि मन महँ मोदअपारैं

तेहि छन सिंहासन सखिगन तहँ।भे बिलीन सियपरसुतेजमहँ॥
रोदन करि कर चरन चलाई। कहाँ कहाँ करि लगतु सुहाई॥
मातु सुनैना ह्वै प्रेमातुर। उमगेउ अति वात्सल्य भाव उर॥
स्रवत पयोधर पय अकुलाई। नृप सों लै निज उर लिपटाई॥
महा मुदित छवि सिन्धु निहारी।लली लाड़िली वैन उचारी॥
पाय अपूर्व गोद सुख माँ का।सुख निधिहूँ सिय लिपटी अंका॥
परमानन्द मगन महतारी। रोमांचित तनु दशा बिसारी॥
दोहा—भाव लीन सिय की कृपा, जननिहिं भयउ सचेत।
सत चित रूपा बाल छवि, दरशन करि सुख लेत॥
दम्पति सिय धन पाय के, शोभित सहित समाज।
करि प्रवेश अन्त: पुरहिं, गनेउ निजहिं कृत काज॥

(श्रीमिथिलेशजी लली जी को लेकर अन्त:पुर प्रवेश)

रानी राय भवन निज आये। सिय शिशु छबि लखि मोदबढ़ाये
निरखि रूप चिद बाढ़ी प्रीती। पगे प्राण वत्सल रस रीती॥
मन प्रसन्न तनु पुलकित राजा। कहे बजावन मंगल बाजा॥
किय बहु बेष बजनिहा बृन्दा। लगे बजावन मन सानन्दा॥
जनक द्वार बहु बाजन बाजे। तोप तुपक रव दस दिशिगाजे॥
पंच शब्द धुनि चहुँदिशि गूँजी। होत महामंगल मन पूजी॥
करि सनमानि गुरुहिं नृप आनी। श्राद्धनन्दि-मुख कियोबखानी
बिधिवत जातकर्म सब कीन्हा। विपुल दान मुनि विप्रन्हदीन्हा
दोहा—जाग बलिक गौतम असित, शतानन्द मुनि आदि।
सबहिं कनक मनि धेनु बहु, दिये जनक अहलाद॥

देहिं अशीष विप्र मुनि राई। पढ़हिं सुमंगल शांति सुहाई ॥
बृन्द-बृन्द मिलि चलीं लुगाई। सहज शृंगार किये उठि धाई॥
चहुँदिशि आवत नारिन यूथा। सिंधु जाहिं जिमिनदीबरूथा॥
कनक कलश भरि कोपर थारा। गावति पैठहिं भूप दुआरा ॥
उमा रमादि सहित सुर सुँदरि।गावहिं गीत तियनसंगमिलिकरि
इक प्रविशहिं इक निकसहिंछन-छन।राजमहलपुरनारिमुदितमन
करहिं आरती जनकलली की। रूपराशि उर मोद थली की ॥
करि नेवछावर हिय हुलसाई। चरण परैं सब बलि-बलि जाई
दै अशीष लखि होहिं अनन्दा। मनहूँ कुमुदिनी पूरण चन्दा ॥

(पुरनारियों का भेंट लेकर आना)

आवहिं पुर रमनी हरषाई। करहिं भेंट मंगल मन भाई ॥
कोऊ फल कोउ फूलन माला।कोउ धन रतन महामणिजाला॥
निरख सुता मुख करहिं बड़ाई। धन्य रानि कन्या अस पाई ॥

चकई भँवरा गोली झुन झुन मोती हो।
जेहि निरखत भइ मंद चंद की ज्योती हो ॥
मोर चकोर शुकादिक कल धर लाई हो।
पवन प्रसंगहिं बोलत मधुर उड़ाई हो ॥

॥ सुगन्धा छन्द ॥

बढ़हिन लाई मोर चकोर बनाय के।
काठन की रचना तेहि मणिन जराय के ॥
भवँरा चकई विविध खिलौना लाई है।
तेहि महँ अमित प्रकार कि मणिन लगाई है ॥

कोइ बड़हिनि हाथी घोड़ा अरु पालकी ।
काठ रु मणिन जराव कि सुन्दर नालकी ।।
बहुरि सोनारिन भूषण मणिन जराव के ।
लाई अमित प्रकार के पाट गुथाव के ।।
बहुरि खेलौना अमित प्रकार मणिन के ।
कंचन की रचना जड़े रत्न कणीन के ।।
ता महँ हीरा बज्जिरत सब मणि लागी है ।
जहर अपर जे मणि गण तित कहँ त्यागी है ।।
जो मणि रसना लगत पुष्ट कर अंग है ।
तेहि के रचित खेलौना मानहुँ बंग है ।।
झिंगुली टोपी दरजीन लाई भाव ते ।
राजित अद्भुत मोती मणिन जरावतें ।।
पुनि पटवा की नारी आई छबि भरी ।
लीन्हे अमित प्रकार की घोरी मणि जरी ।।
मणि मोतिन की झब्बा अद्भुत राजहीं ।
आंगन में सब षढ़ि अति छबि छाअहीं ।।
पुनि महाजनी चटनी मोतिन की जरी ।
झुन झुन चकई डोरि लिये आंगन खरी ।।
रत्न विनिर्मित घिरनी लट्टू लाइहै ।
अमित दाम की पलना लाइ दिखाइ है ।।
कोइ पलना रंग हरित जरित मरकत घने ।
कोइ पलना रंग लाल पिरोजामय बने ।।

कंचन की पलना मरकत हीरा लसे।
परम सोहावन लागत पावत राजहीं ।।
मालिन आई गहना फूल ले आइ है।
विविध फूल के भूषन बरणि न जाइ है ।।
बन्दनवार विचित्र सो सुखमा ऐन है।
मनहुँ बनायउ फन्द बझत मृग मैन है ।।
वरण वरण की गुड़िया कंचन मणि मई।
लाई दौरनि साजि अजिर शोभित भई ।।
यहि विधि सकल पावनियां आंगन में खरी।
नख सिख अमित शृंगार किये शोभा खरी ।।
रानी अति प्रसन्न मन द्रव्य लुटावहीं।
मन वांछित धन पाइ मुदित घर आवहीं ।।
बोले सब निज निज भवनन जाई।
करन लगे उत्सव हुलसाई ।।

दोहा—मातु सुनैना भाग की करहिं प्रशंसा भूरि।
सोऽपि सबै सन मानहीं, बचन सुधा रस पूरि।।

अगर धूप चहुँ जनु अँधियारी। उड़त अबीर मनहुँ अरुणारी ।।
भरि-भरि मूठ गुलाल चलावहिं। कोउ मुख लेपहिं रंग बनावहिं
दधि केशर अतरादिक भरि-भरि गेद बनाय चलावहिंबलकरि
एक-एक कहँ पकरि नचावहिं। रंग भरी पिचकारि चलावहिं
चोवा चंदन अतर अरगजा। दधि अवीर केशर मृग मद जा।।
छिरकहिं कुसुमन सार हरषहीं। अरु गुलाब जल धरबरषहीं।।

मृगमद चन्दन कुंकुम कीचा मची सकलवीथिन्हबिचबीचा
पुरजनपरिजनमिलिएक साथा उत्सवकरि सब होहिसनाथा
नाचन लागीं नटीं नवेली । तरल तान गावहिं अलबेली ॥
नटिन संग नटकोतुक करहीं सबहिं रिजाइ मोदमनभरहीं
पुर नर नरि मगनसब होहीं । पुलकित तन हिय प्रेयसमोहीं॥
भई प्रगट मिथिलेशकिशोर।अस कहिसब नृत्यपतिचहुँओरी॥
दो०—कोष भवन खुलवाय नृप, सबहि लुटावत दान ।
धरनि परे मनि गन लसत, जनु नभ नखत लखान ॥
मंत्री दान देत अनुरागे । लै-लै निज कर बाँटन लागे ॥
रतन कनक मनिबसन अनूपा।दिये लुटाय याचकनभूपा॥
धन कंचन मुक्ता मनि हारा । हीरा पन्ना नीलम प्यारा ॥
लाल महानग आदि सुहाये।देत सबन्हि कहँ जेहिजोभाये॥
सूत बन्दि नट नटी समाजा । दै—दै सब परितोषे राजा॥
याचक देत लेत पुनि औरहिं।लेत लुटावत सोतेहिठौरहिं॥
सरवस दान दीन्ह सब काहू।जो पावा राखा नहिं ताहू ॥
इमि अपारदीन्हेउ बहु दाना।भरोइ देखियतसकलखजाना॥
परतम ब्रह्म सीय अवतारी।तिलक भूमि प्रगटीसुखकारी॥
तहँपर अस सिधि काहे नहोवै।जाकीकृपा लोक-पतिजोवै॥
दो०- मागध बंदी सूत गन, विरदहिं करत बखान ।
नटी विदूषक भाट भल,सजहिं स्वाँगसुख खान ॥
चौ०—इतनेहि महँएक ढाढ़िनि आई।आपनरूपविचित्रबनाई॥
दम्पति नृपतिकीन्ह सनमाना।निमि कुल यसकहिलागीगाना॥

गाय–गाय यशनाचन लागी।ललित लाड़िली छबि अनुरागी।।
कौतुक करन लगी हरषाई। बाजे बहुत प्रकार बजाई ।।
तान तरंग रंग अति भारी। असिपर नृत्य कियो सुखकारी ।।
लीला करि पुनि हास्यबखानी।तबहिं ललीसियमृदुमुसुकानीं।।
न्योछावरि तब कीन्ह भुआला। कंचनकंकन मनिभयमाला।।
बोली ढाढ़िनि नृपति उदारा। दीजै मोहिं सकल श्रृंगारा ।।
सुनि प्रिय बचन हृदय हुलसाई।दीन्हे भूषन बसन मगाई ।।
चूड़ा मणि बेशरि मनभाई कर्ण फूल दुलरी छबि छाई ।।
दो०–चन्द्रहार चम्पाकली बिन्दा बाजू बन्द।
कंठा अरु कटि किंकिनी,नूपुर ध्वनि आनंद ।।
चौ०–साठिकोटिको लहँगा बादल।सारीमोल सवाई लागल।।
साठि लाख की चोली सुन्दरि।मोतिन मणिन जड़ाईमनहरि।।
खोलि पिटारी से अतोलकी। दीन्ह चूंदरी एक अमोल की ।।
जगत मिले नहिं मोलजाँचकी। लगी किनारी पदुम पाँचकी ।।
भूषण बसन अनेक प्रकारा।साजि सकल नख शिख श्रृंगारा।।
पुनि दीन्हें गज रथ अरु ग्रामा।ढाढ़िनि भइमन पूरन कामा ।।
देत अशीष हरषि हिय भारी। युग-युग जीवो जनकदुलारी ।।
भूषण बसन मूल को कहुरी। कमला देखि सिहाई जहुरी ।।
इन्द्र कुवेर सुमेर आदि धन।सुनि लखि लागतचौथाई कन।।
ढाढ़िनि बिदा भई मन भाई। निकसि महल ते द्वारे आई ।।
सम्पतिसकल लुटावन लागी।राखी नहिंकछु सिय अनुरागी।।
संम्पति सकल लुटावन लागे। तेसब सिय सनेह रस पागे ।।
उत्सव लीला देखन हेता। आये संभु भुसुंडि समेता ।।

बाल रूप धरि महलन माँही। विचरत कोउ पहिचानत नाहीं।।

दो०—ध्वज पताक तोरन कलश, राज भवन जस राज।
मंगलमय मिथिलापुरी, भवन-भवन तस भ्राज।।

चौ०—राजभवन महँ उत्सव जैसो। घर-घर देखिय आनंद तैसो।।
सब घर पुर महँ बाज बधावा। उत्सव मूर्तिमान जनु आवा।।
मंगल उभय पहर दिन बीता। प्रगटि पुनीत लगन जब सीता।
तेहि पाछे त्रय रानि महल महँ। त्रय भगिनी भई चहल पहल तहँ।।
सीय विमातृ कांतिमति नामा। जन्मी श्रीउर्मिला ललामा।।
युगल रानि कुसकेतु बखानी। युगल सुता प्रगटी छबिखानी।।
श्री सुदर्सना मातु सयानी। जाई लली मांडवी रानी।।
पुनि लघुरानि सुभद्रा प्यारी। जन्मी श्रुतिकीरति मनहारी।।
मंगल महँ मंगल अधिकाना। महामोद मिथिला प्रगटाना।।
सिया माँडवी उर्मिला प्यारी। श्रुतिकीरति लघु ललीदुलारी।।
चारुचन्द सम चारों बहिनी। निज इच्छा सिसुतन धरि अवनी।।
प्रगटि भई युग युगल क्रिसोरी। द्वै श्यामल द्युति द्वै तन गोरी।।
जबते नृपति सुता भई चारी। तबते मुदित अधिक नरनारी।।
गृह-गृह नाचहिं मंगल गाई। बाजत चौगुन अनंद बधाई।।
भवनवेद ध्वनि अतिमृदु बानी। लगत सुखद सब विधि सरसानी।।
पुर अरु ब्योम मच्यो मन भावा। अकथनीय सुख सरस सुहावा।।
अद्भुत उत्सव रंगन जोही। गये सकल संसार सुमोही।।
विधि हरि हर सुरपति सुरबृन्दा। सकल मनुज तनु धरि सानंदा।।
रमणिन सहित नेह सुख फूले। मिथिला गलिन फिरहिं मन भूले।।
लखि उछाह रबि रथ थकि गयऊ। मास दिवस कर दिवस सो भयऊ।।

देखत बाढ़्यो दिवस अपारा।हय युत भानु गती हिय हारा ।।
यह रहस्य काहू नहिं जाना । दिनमनि चलेकरत गुनगाना ।।
प्रमुदित हृदय सकलपुरवासी । मिलीसबहिं परमानंद रासी।।
दो०–सिय जन्मोत्सव मोद रस, रंग तरंग न माहिं ।
छिन सम बीते पाँच दिन, काहुहितन सुधिनाहिं।।

❀ छठी उत्सव ❀

दो०–जन्मवार के छठे दिन, भो रबिवार पुनीत ।
तेहिदिन कुँवरिन कीछठी,सजत साज तिय प्रीत ।।
चौ०-आयउछठीदिवसअतिपावन। पुरजनपरिजनमोदबढ़ावन।
सिया छठी उत्सव हित राजा।साजेउ परमम नोरमसाजा ।।
घर-घर बंदनवार बँधाई । मणि मोतिन सोंचौक पुराई ।।
नाचगान युत बाजें बाजा । छठी साज सजवाये राजा ।।
आयउ गौतमादि मुनि बृन्दा । पढ़हिं सुवेद शान्ति सानंदा ।।
फल फूलादिक साज मगाये । मनि मोतिन सों चौकपुराये ।।
गलिन-गलिन सुगन्ध छिरकाई । बसन द्वार बहु रचे बनाई।।
मनिमय रची सकल फुलवारी । दीप बृक्ष बहु रचे सँवारी ।।
कदली खम्भ लतन के द्वारा । ध्वज पताक तोरन के हारा ।।
दो०-ध्वजपताक गृह-गृह सजे, रोपेकदली द्वार ।
मंगलमय चित्राम लिखि, बाँधे बंदन वार ।।
चौ०-उत्सवघर–घर नगर मझारी।राजमहल शोभाअतिभारी
सुर दुंदुभी बजावहिं हरसहिं।बारहिंबार सुमन स्त्रकबरसहिं।।
मिथिला ललित उछाह गठी है।मुनि गन मंगलशांति पठीहै।।

शतानन्द मुनि आदिक आये। लोक रीतिहित साजसजाये॥
आयसु दीन्ह महल महँ आई। प्रथमसियहिं अन्हवावहु जाई॥
सुनिप्रिय वचन हरषिहिय रानी।करन लगी कुलविधिसुखमानी
सिय के अंग सुगंध लगाई। उबटित कमलाजाल अह्वाई॥
दिब्य बसन भूषन पहिराये। झलमल झलकत लगत सुहाये॥
सीय बाल छबि वरनि न जाई।नयनन निरखत हीबनिआई॥
अंजन अँखियन माहिं लगायो।वंकभृकुटि मसि विन्दु सुहायो॥
अरुणिम अधर हरत हियहासा। गोल कपोल मनोरमनासा॥
दोहा-चरण कमल कोमल लसत, चमकत नख मणि जोति॥
नख सिख दामिनि सी दमक, लखि चकचौंधी होती॥
रानि सुनयना की सखि आई।करि विधान रानिहिं नहवाई॥
करन लगी रचि-रचि शृंगारा। साजे बसन अनेक प्रकारा॥
बेनी गूँथहिं कला दिखाये।विच-विच सुन्दर सुमन लगाये॥
मोतिन सों रचि माँग सँवारी।शीश फूल शोभा अति भारी॥
नख शिख रचि शृंगार सोहावन।बाजूबंद भुजन मनभावन॥
कंकंन किंकिन स्वर श्रुतिसारा।उर दुलरी तिलरीमणिहारा॥
जावक रंजित चरण सुहाये। नूपुरादि भूषन पहिराये॥
राजति पीत रंग की सारी। चहुँदिशि मोती लगी किनारी॥
दोहा-सीय मातु शोभा अमित, सिर सिंदूर सुहाय।
कज्जल दृगन लगाय सखि, वीरी दई बनाय॥
पान खात मुख अधिक सुहाये।तब सखि अतर सुगंध लगाये॥
करि शृंगार सुनयना रानी। लीन्ही गोद सियहिं पुलकानी॥

मोतिन पूरी चौक सुहाई । कंचन चौकी तहाँ बिछाई ।।
तापर बैठीं मातु सुनयना । गोद सुता राजति छबि अयना ।।
मनहुँ सिंधु रमनी श्रीगंगा । लक्ष्मिहिं गोद लिए उमंगा ।।
जनक नृपतिहू करि शृंगारा । आये लगत परम सुकुमारा ।।
शतानन्द तब हिय हरसाई । करवाई कुल रीति सुहाई ।।
ब्राह्मण बृन्द वेद ध्वनि करहीं।जय-जय-जय तिय नरउच्चरहीं
दोहा–गावन लागीं गीत सब, सजनि समय अनुसार ।
बाजन लगे बाद्य बहु, मधुर महल के द्वार ।।
छन्द–बरसहिं सुमन सुर वृन्द सुन्दरि बृन्द मंगल गावहीं ।
कुलदेव पूजि सप्रेम रानी राय शीश नवावहीं ।।
माता सुनयना बार--बार पसारि अंचल याचहीं ।
युग--युग जियो मेरी लली सिय शेष सिर जौ लौ महीं ।।
दोहा-करत नृपति यहि विधि महल, छठी दिवस सबिधान ।
चहुँदिशि उत्सव नगर महँ, मंगल गान महान ।।
द्विजन दान दिय भूप उदारा । पहिरावन अरु नेग अपारा ।।
पाइ जहाँ तहँ देहिं अशीसा । कन्या चिरजीवै जगदीसा ।।
द्वार भीर लखि नृप हरसाये । देश-देश के मुनि जन आये ।।
कौतुक विविध प्रकार दिखावहिं।नृत्यकलादि अमितप्रगटावहिं।
नाना विधि के खेल सुहाये । बहु संगीत कला दरसाये ।
ह्वै प्रशन्न सनमानहिं राजा । देहि ग्राम गज धन सुख साजा।।
याचक वृन्द भीर बहु आई । देखि नृपति मन सुख न समाई ।।
मन्त्रिन सों नृप कहेउ सहरसा । धन रतनन की कीजै बरसा।।

ते चढ़ि ऊँचे महल अटारी। लगे लुटावन धन जिमि बारी ॥
स्वर्ण रतन धन भूषण अम्बर। हीरा मोती लाल जवाहर ॥
दोहा–सुर भिक्षुक बंदी बनें, नर कौतुक महँ आय।
लूटन लागे प्रेम सों, जनक राय गुन आय ॥
पुनि नृप जनक हृदय हरसाये। पीरे बसन अनन्त मगाये ॥
आयसु दीन्हीं नगर मझारी। सबहिं करहु पीताम्बर धारी ॥
नगर माहिं सब कहँ पहिराये। पीरे–पीरे बसन सुहाये ॥
बालक बृद्ध सकल नर नारी। पीरेइ सब दरसत छबि भारी॥
पीरी सकल पुरी छबि न्यारी। फूली मनहुँ पीत फुलवारी ॥
सीय छठी कहि-कहि सब नाचत।सुखी रहै सिय बिधि सोयाँचत
यहि विधि उत्सव होत अनूपा।महलन गमन कियो तब भूपा॥
बोलि सुसेवक आज्ञाकारी। करहु जिमावन केरि तयारी ॥
दोहा--प्रथमहिं मंत्रिन्ह नगर महँ, नेवते सब नर नारि।
बिप्र बृन्द मुनि बृन्द बहु, आये समय बिचारि ॥
नेवते सादर सब पुर बासी, परिजन प्रियजन सुजन प्रवासी ॥
जनक नगर के सब नर नारी। सबहिं बुलाये नेवति सु झारी
यथा योग्य सब कहँ बैठारी। परसत भोजन रुचि अनुहारी॥
पूरी पुआ मधुर मिष्ठाना। ब्यंजन विविध सुखद पकवाना ॥
मोदक मोहन भोग सुहावन। पायस पापर रुचि उपजावन ॥
रसगुल्ला अरु बालूसाही। परसन लगे वस्तु मन चाही ॥
चारि भाँति षटरस के भोजन।को गिन सकै पदारथ अनगन॥
कढ़ी पकौड़ी चटनी प्यारी।दधि ओदन अतिसय रुचि कारी॥

दोहा-आम अनेकन भाँति के, परसे प्रेम समेत।
पावत सबं आनन्द मगन, उठत नाम नहिं लेत।।
शतानन्द आदिक ऋषिराई। तृप्त भये सुख कहि नहि जाई।।
बिप्र बृन्द आनन्द किलोल। सिय छठी की जय-जय बोलत।।
कहहिं परस्पर सकल प्रजाजन। देख्यो सुन्यो न कहुँ अस भोजन
देव वृन्दहू नर तनु धारी। करन लगे भोजन रुचिकारी।।
स्वाद सराहिं वस्तु पुनि माँगहिं। सबहिं सराहत निज-निज भागहिं
अद्भुत आनन्द बरनि न जाई। सबहीं दीन्हेउ तृप्त जिमाई।।
पुनि अंचवाय सहित सनमाना। सुखद सुगंधित दीन्हो पाना।।
विप्र सप्रेम दक्षिणा पाई। चले अशीषत करत बड़ाई।।
दोहा-यहि विधि सबहीं के हृदय, रहे मोद महँ छाय।
भयउ छठी उत्सव सरस, सो कछु बरनि न जाय।।
छन्द-उत्साह अमित उछाह आनन्द सिन्धु सों उमड़त भयो।
नृप रानि महलन सखि सहेलिन प्रीति युत भोजन कियो।।
यहि भाँति आई ललित रजनी छठी की आनन्दमयी।
छाई मनोहर चाँदनी नभ चन्द द्युति अतुलित भयी।।
दोहा-सित चौदसि वैशाख की, छिटकी चांदनि राति।
छठी सिय चहुँ भगिनि की, सुख उमगत सब भाँति।।
छकी छेम छबि सिय छठी है। मानहुँ मंजुल मोद मठी है।।
सिया छठी लखि प्रीति सुपागी। युवती यामिनि जागन लागी।।
नहिं जागै को अस हत भागी। आपुहिं नींद भामिनी जागी।।
गावहिं सखी जागरण गीता। वाद्य बजावहिं मधुर सुरीता।।

नारि परस्पर नात लगाई। व्यंग गारि देती बहू गाई ॥
कौतुक करहिं विचित्र बनाई। नृत्य गान करि सुनहिं सुनाई ॥
चढ़ी विमानन लखि-लखि हरषहिं। सुर सुँदरी सुमनसुरबरषहिं
कहैं सुनैना मातु निहारी। रहै मुबारक लली तुम्हारी ॥
दोहा-चहुँ कुँवरिन की भइ छठी, चहुँदिशि बरषत रंग।
अवनि गगन रस महँ मगन, सबके पुलकित अंग ॥
शतानन्द गुरु को भयो, पूजन विबिध प्रकार।
दे अशीष गवने भवन, चतुर कुँवरि उर धार ॥
बदरी नारायण चरण रानिन नाइन माथ।
निज कुल देव निहारी छवि, लोचन भई सनाथ ॥
कर जोरे बिनती करें, प्रेम न हृदय समाइ।
चारों कुअँरि चिर जीवहीं, यह अशीष सुभ पाइ ॥
जय-जय श्री सर्वेश्वरी, जनकलली सुर वृन्द।
करि गवने निज धाम सब, ब्रह्मादिक सानन्द ॥
नित उत्सव आनन्द अनूपा। निसिदिन जात न जान्यो भूपा ॥

(अथ बरही उत्सव नामकर्ण)

आयेउ बरही दिवस सुहावन। मंगलमय अति पावन धावन ॥
छठी माहिं जिमि उत्सव कीन्हो। भोजन भयो दान जिमिदीन्हों
तादृश दूनों बरही माहीं। उत्सव में कहि जात सो नाहीं ॥
चढ़े विमान बिबुध बर बृन्दा। पुर ऊपर आये सानन्दा ॥
मिथिला घर-घर बाजत बधाई। राजमहल मंगल अधिकाई ॥
महल सज्यो अतिसय छबि पायो। अद्भुतबिधिसब नगरसजायो

सींचि सुगन्धन गली बजारा। चौके रचे दुआर दुआरा ॥
तान तरंग रंग सुखभारी। पीताम्बर धारी नर–नारी ॥
करि श्रृंगार जनक नृप आये। बैठि सिंहासन लगत सुहाये ॥
रानि सुनयना करि श्रृंगारा। आईं उर आनन्द अपारा ॥
गौतम शतानन्द सानन्दा। आये संग लिए मुनि वृन्दा ॥
मख कर्ता हरि भक्ति उपासी। मंत्र विसारद श्रुति अभ्यासी॥
वन्दे पद नृप रानि सबहिं के। दिये सबहिं आसन अतिनीके ॥
ललिहिं उबटि उर अति सुख पायो। नाउनि नेह सहित नहवायो
दोहा–लगीं करन श्रृंगार सो, सुर–सुर तीय सिहाहिं।
हनि दुंदुभि बरसहिं सुमन, हरसहिं अति मनमाहिं ॥
केश कुटिल कारे सुकुमारे। सुरभित तैल लगाय सँवारे ॥
कंचन सूत कलित कल कुलही।जनुघन पर थिर दामिनि उलही
अंजन रंजित अँखियाँ सोहैं। बंक भृकुटिया जनमन मोहैं ॥
नासा ललित अधर अरुनारे। मधुर हँसनि लागत अतिप्यारे॥
गोल कपोल चिबुक मनमोहै। लघुमणि कंठ विभूषण सोहै ॥
झीन झँगुलिया तनु छवि कारी। पंकज पानि पहुँचिया प्यारी॥
चरण अंगुलिन नख युत जोती। कमल दलन बिलसै जनुमोती॥
करत मधुर धुनि नूपुर सीके। मन भावतो सुआसिनि नीके ॥
दोहा–सिय शिशु तन श्रृंगार करि, नाउनि नेह निहार।
जन्म सुफल निज लेखि पुनि, आपु गई बलिहार ॥
निमिकुल राज नहाय नव, युग पीताम्बर धारि।
सहित सुनयना चौक पर, बैठे आसन मारि ॥

लली मातु की गोद महँ, शोभित सहज सुभाय।
मानहुँ प्रतिमा हेम की, चन्दहि रही खेलाय ॥
शोभित लली मातु के अंका। थिर दामिनि जनु लिये मयंका॥
नाम करन कर अवसर जानी। बोले मुदित हृदय नृप ज्ञानी ॥
पुत्रिन नाम करन करि दीजै। यह मन इच्छा पूरन कीजै ॥
उपरोहित तब हृदय विचारी। विधिवत लागे करन तयारी॥
पूजे कलश गनेश प्रधाना। दिगपति षट त्रय ग्रह सविधाना॥
पढ़ी शाँति गौतम सुत ज्ञानी। करि अभिषेक कहा मृदुबानी॥
सुनहु महीपति तत्व उचारा। भयो उदय बड़ सुकृत तुम्हारा॥
दम्पति तब दुहिता शुभ हेरो। नीके नखत जन्म इन्ह केरो॥
उत्तम लग्न बलिष्ठ प्रमानौ। उच्च अखिल ग्रह मंडलजानौ॥
जनक राय यह तुम्हरी कन्या। विधि हरिहर वंदित पदधन्या॥
इनके नाम अनंत अनूपा। जानहिं संतन सुर सुर भूपा ॥
तदपि यथा अवसर अनुसारी। कहिहौं नृपति नाम दुइचारी॥
साक्षात् सीता अविनाशिनि। राम प्रिया साकेत निवासिनि॥
सीतानाम प्रसिद्ध सुखाकर। मीन मंजुनयना सुरासि कर॥
तुम्हरो नाम जनक जग अहई। यासो नाम जानकी कहई ॥
प्रगट भई भूमी सो आई। सोइ भूमि जा नाम सुहाई॥
श्री हू को श्री की यह दाता। नाम सत्य श्री जग विख्याता॥
कहियत नाम विदेह तुम्हारो। इमि वैदेही सबहि पियारो॥
सब प्रानी की देहन माहीं। जो विशेष थित रहत सदाहीं॥
ताते इनहिं कहिय वैदेही। प्रान प्रान जिव के जिव जेही॥

सुता सुनयना की गुन धामा। धरिय सुनयना नन्दिनि नामा।।
प्रगटि आपुही सब जग जानै। इमि अयोनि जा नाम बखानै।।
सदा दिव्य छवि इक रस गोरी। यासो कहिये नित्य किसोरी।
यहि विधि इनके नाम अपारा। होइहैं प्रगट सकल संसारा।।

दोहा–इन्ह मँह सीता नाम को, अमित प्रभाव प्रताप।
अपौरषेय सुवेद महँ, प्रगट करत मुनि जाप।।
एक अक्षरी कोष में 'स', है ब्रह्म को नाम।
"इता" प्राप्ति वाची सु वह, कियो तासुमैं धाम।।
तत्त्व मसी वेदान्त को, महा वाक्य सिद्धान्त।
सोउ संभव सिय नाम सो, बिना बूझ भवभ्रान्त।।
तत्पद रुचिर तकार है, त्वं पद मधुर अकार।
सी मिलि असी प्रसिद्ध ही, कीजै विशद विचार।।
रस पाँचो श्रीजानकी, नाम मध्य निरधारु।
सूक्षम मति से समझिये, भाव भावना गारु।।
'सी' सकार शृंगार रस, ललित युगल रस रूप।
सख्य इकार रसाल सुठि,श्रुति सद सुवच निरूप।।
शान्त क्रान्त रस सरस सोइ, रूप तकार प्रमान।
गुरु अकार सो दास्य रस, जानहिं सुबुध सुजान।।
लघु अकार वात्सल्य रस, विगत निरसता रीति।
यहि विधि पाँचो रस विदित, भक्तन हृदय प्रतीति।।
"सी" सिंदूर सदृश लसत, भक्ति भामिनी भाल।
"ता" तारादिक शक्ति को, हेतु विचित्र रसाल।।

'सी' सिर भूषण विश्व कर, निरदूषन गुन खान ।
'ता' तप हर तारीफ तन, तोषत ज्ञान प्रधान ।।
'ता' तर तुला विचित्र चित, तौलत नेह नवीन ।
समते जे इनमें रहे, अपर ऊन दिन दीन ।।
श्री श्रुति कीरति माँडवी, ललित उर्मिला रूप ।
इनहीं के अन्तर लसत, समझे संत अनूप ।।
सुखद 'स' अक्षर सब संसारा । 'इ' अक्षर ईश्वरी उचारा ।।
कहियत 'त' कहुँ तत्व परात्पर । प्रद आनन्द परम 'अ'अक्षर।।
ब्रह्म संस्था ब्रह्म स्वरूपा । परतम ब्रह्म अनादि अनूपा ।।
ब्रह्म वेत्तन प्राप्ती देखी । ताते सीता नाम सुलेखी ।।
यहि बिधि सीता नाम सुहावन । जगदीश्वरी प्रगट जग पावन
सीता नाम जाप मन लावै । परम धाम परमानंद पावै ।।
सीता नाम जपै जो कोई । तत्व परात्पर दर्शन होई ।।
अस कन्या तुम्हरे गृह आई । निमि कुल की तिहुँ लोक बड़ाई।
सुनि सीता महिमा मन भाई । रानि राय अति सुख न समाई
महिमा नाम सुनत अनुरागे । सब कोउ आसिष देवन्ह लागे ।।
छंद—पुनि औरसी दुहिता महिप तौ श्रीमती कान्ती जनी ।
मतिवन्त परे अनन्त से, लक्षमण शक्ति सुगुन भनी ।।
निरवाध भाव अगाध साधक, साध्य हित पहिचानिए ।
तिहिको सनातन नाम शोभन, उर्मिला कर जानिए ।।
दोहा—सुदर्शना कुश केतु केतिय, सुभद्रा शुभ रूप ।
भई सुता द्वै भाग बड़, दोउ सुर्गम ते भूप ।

नित्य धाम नित भरत को, शक्ति प्रथम है सोय ।
नाम मांडवी तासु को, दुहुँफुल मण्डन होय ।।
शक्ति नित्य शत्रुहन अनूपा । सोहै श्रुतिन कि कीरति रूपा ।।
वरणाश्रम के धर्म उचारी । भव को पंथ लगावन हारी ।।
ताते श्रुति कीरति तिहि नामा । इन्हते सब पूरहि मन कामा।।
चहु भगिनी सुरतिय सिर भूषन । शक्ती शुद्ध अनादि अदूषन।।
चिरआयसु चिर होंहिसुहागिनि।बिलसहिचिरसम्पतिबड़भागिनि
पती ब्रतन्ह महँ मुख्य अनूपा । महानन्द अम्भोधि सरूपा ।।
चक्रवर्ति श्री दशरथ नृप के । ह्वै हैं पुत्र वधू प्रिय पिय के ।।
गुन छवि रूप अनन्त सो होई । शीलवती कुल मंडहिं दोई ।।
प्रेम भक्ति करनी जग वन्दिनि । महाविषम भवरोग निकन्दिनि
दुहिता चहुँ परि पालहु राऊ । यदपि तुम्हार विराग सुभाऊ।।
इनके बाल बिनोद निहारी । अनुदिन लहत रहब सुखभारी।।
जो शत पुत्रन से सुख होई । इन पुत्रिन से पावहु सोई ।।
आयो परम मनोहर पालन।रचित विचित्र कनक मनि जालन
तापर ललित ललिन्ह पौढ़ाई । गावहि मातु मल्हाइ मल्हाई।।
देखत शोभा दृष्टि मिलाई । हँसे हँसत किलके क़िलकाई ।।
दम्पति दशा न कछु कहि जाई । भये सुखी नहि हृदय समाई।।
सिय बरहौ बारहौं विभाकर । विकसे लखि सरोज नर मुनिवर
शतानन्द को पूजन कीन्हों । विप्रन्ह सहित दान नृप दीन्हों ।।
याचक नेगिन जो जेहि भावा । सो सोइ पाइ अशीष सुनावा।।
दोहा—यथा योग कुल रीति करि, उत्सव कीन्ह अनूप ।

सकल सराहत देव मुनि, धनि-धनि मिथिला भूप ।।
चहुँ कुँवरिन की जस कियो, उत्सव श्री मिथिलेश ।
तस न सकहिं त्रय भुवन महँ, कहि कवि शारद शेष ।।

(बाल बिनोद) लली जू के

सुभग सेज महँ कबहुँ सुमोदा । माता लसहिं लली लै गोदा ।।
कबहुँ पौढ़ि पय प्याय सप्रेमा। सिय मुख लखहिं छकी सुख छेमा
कबहुँ गोद लै–लै दुलरावति । रानि सुनयना अतिछबि पावति
शरद चन्द ते अधिक सुहावन। दिन-दिन बढ़ति छटामनभावन।।
दिव्य वदन छबि निरखि सुहाई। चूमति पुनि-पुनि कंठ लगाई।।
कबहुँक ऊँचे अधिक उठावैं । कबहुँक कंधन पर बैठावैं ।।
कबहुँ मधुर स्वर गाय गवावैं । कबहुँक लै झुनझुना बजावैं ।।
कबहुँ उबटि अन्हवाय सिंगारी। निरखि सुनयना नैन सुखारी।।
कबहुँ किलकलति बाल उमंगन। जानु पानिधावहिंमणिअंगन।।
कर गहि माता चलनि सिखावति। चुटकी करन बजायबजावत
कबहूँ जनकलली लै अंका । दुलरावत लखि सुमुख मयंका ।।
दोहा-सिय स्वामिनि सर्वेश्वरी, व्यापक परमा शक्ति ।
सो सिय खेलति गोद महँ, बस भई प्रेमा भक्ति ।।

(श्री नारद जी का आगमन, हस्त, चरण, रेखा देखना)

बैठि बालिका वदन निहारहिं। जनक सुनयना सहित दुलारहिं।।
तेहि अवसर नारद मुनि आये । करत राम गुन गान सुहाये ।।
उठे जनक लखि सहित समाजा । बन्दे पद रानी युत राजा ।।
सियहिं उठाय प्रणाम कराये । लीला लखि ऐश्वर्य भुलाये ।।

दिये मुनीश अशीष विशेषी । बड़भागी भूपहिं हिय लेखी ॥
मुदित महिप मुनि पाँय पखारे । सादर सिंहासन बैठारे ॥
पूजे बहु विधि मुदित महीशा । कहे भयउँ मैं धन्य मुनीशा ॥
दोहा-सुनि मुनि कहे नरेश सन, हमहूँ धन्य विदेह ।
जग जननी के जनक तुम, पूजेहु जेहि कर नेह ॥
सुनि सीरध्वज प्रेम प्रमोदी । सिय बैठाये मुनि की गोदी ॥
कहकर जोरि सुनिय मुनि नाथा।कहियललीलक्षणलखिहाथा॥
कह मुनि सुनहु भूप सुख छाके । लोक विलक्षण लक्षण याके ॥
कहँ लगि कहौं सुता प्रभुताई । विधि हरिहर बन्दित पतिपाई।
सीर ध्वज तब सुता पताका । भई करनि कुल कीरति साका॥
सीता सीतल क्षमा-क्षमा की।स्वामिनि शिवा सु महारमाकी॥
भजत चरन जन भव भय भानी।सात द्वीप महि मंडल रानी ॥
रति शत सम सुन्दरि शुभ शीला।दयावतीयुतललितसुलीला॥
छन्द—लीला सलोनी करनि कल, महिमा महोदधि जानकी ।
मिथिला मही भव मंजु मणि, पर शक्ति पुरुष प्रधान की ॥
पूजित परम हंसादि पद प्रद, परम पद निर्वान की ।
जग बन्दिता सुर अर्चिता, जगदीश्वरी प्रिय प्रान की ॥
दोहा-जानहु जनक जनेश, जननी जगदानन्द की ।
कहि न सकै शिव शेष, याके लक्षण गुन सुयस ॥
बगिया माहिं याहि एकबारा । मिलिहै श्यामल राजकुमारा॥
तिनहीं के संग होइहि ब्याहा।होइहि जग स्वामी सिय नाहा ॥
श्याम काम शत सम अभिरामा।रूप सच्चिदानन्द सुधामा ॥

जगत बंद्य जग पूज्य प्रतापी । संतन हृदय बसहिं सुखथापी ॥
कृपा सिन्धु जन बन्धु उदारा । अधम उधारन हरन बिकारा॥
पतिब्रता चूड़ामणि सीता । अस पति लहि सेइहै बिनीता ॥
बसिहिं परम पद दायक पुर महँ। बैकुण्ठादिक बंदत जाकहँ ॥
पैहै ससुर सुरेश सहायक । चक्रवर्ती पद पालक लायक ॥
लैहैं देवर तीन दुलारे । ललित भाव भगनिनि पति प्यारे॥
दोहा--यहि कहँ सुन्दर सात शत, सासु सहित परिवार ।
प्रेमिनि पुत्री ते अधिक, करिहैं प्यार दुलार ॥
निज सुख तजि पति सुख यश देनी।रमन प्रान मनबसकरलेनी
पति पितु बंश प्रशंस पताका।सुजस सुकीरति जिमिशशि राका
सीता नाम अर्थ युत ठीका । सो मम पिता सुनाये नीका ॥
मीन मंजु नयना रस धामा । जानहु जनक रासि कर नामा ॥
धन्य-धन्य तुम जनक महीपा । अस तनया पायहु कुल दीपा ॥
धन्य तुम्हारि रानि कह नारद । सुता सुनयनहि दिये बिशारद
चौंसठ चिन्हन कर फल भाखे।सुनि नृप रानि हृदय महँराखे॥
दोहा--पुनि चरणन के चिन्ह कहि, चालिस अष्ट प्रभाव ।
गुनि मन महिमा सीय की, अनुरागे मुनि राव ॥
राजहिं रानी राज पुर, सियहिं सहित परिवार ।
दै आशीष प्रशंसि पुनि, गये ब्रह्म आगार ॥

(श्री शंकर जी को तान्त्रिक रूप में आगमन)

एक बार शिव बेष बनाये । तान्त्रिक रूप धारि करि आये ॥
अद्भुत लीला करि दिखराई । महलन लै गई दासि सिखाई॥

सिय प्यारी के दर्शन पाई। शिव कैलाश गये हरषाई ।।
एक बार सनकादिक आये। बाल रूप कोउ जानि न पाये ।।
जनक भवन महँ कौतुक कीन्हा।सिय दर्शन करिमारगलीन्हा।।

दोहा--जब तें सीता जनक के, भवन प्रगटव भइ आइ ।
सुर कन्या सब दिन प्रती, आवहिं वेष बनाई ।।
सिय सों भाव जनावहीं, सेवहिं सदा सप्रेम ।
मर्म न काहू लषि परे, आवति जाति सनेम ।।

।। श्री चन्द्रकला जी की जन्म ।।

दोहा–चाचा श्री मिथिलेस के, नृप बर सुब्रत राव ।
भक्ति भाव गुन आगरी, रानी भावा नाव ।।
पुत्र प्रवर तिनके भये, अबिरल रति के धाम ।
चन्द्रभानु तिय सुन्दरी, चन्द्रप्रभा तेहि नाम ।।
एक रासि एक भक्ति रति, युगल चन्द में भाव ।
भाव एक प्रगटी सुता, चन्द्रकला बर नाव ।।
अभिजित मूहूरत नखत, स्वाती माधव मास ।
शुक्ल पक्ष तिथि चारि दस, मध्य दिवस सुभ खास ।।
जेहि दिन छट्ठी लली की, भली भई उत्साह ।
तेहि दिन चन्द्रकला कुँवरि, प्रगटी उत्सव माह ।।

छन्द-भई निमिकुल कन्या,त्रिभुवन धन्या,परम सुमन्या,मनहारी
छबि रूप लवण्या, अग्र सुगण्या, सीय अनन्या सुख कारी ।।
निज मणि जनु खोई, तेहि हित रोई,प्रेम सुबोई, अमिझारी।
पर प्रभा पसारी, प्राकृत न्यारी, पलक न पारी, महतारी ।।

पुनि-पुनि दुलरावे, मातु खेलावै, अंक लगावै, हिय लाई।
तन गौर सुहाई, सुधा लजाई, अमित जुन्हाई, शरमाई ।।
अंचल तर झाँकी, तड़ित प्रभा की, जनु घन ढाँकी, रमकाई।
जनु विधु के अंका, विगत कलंका, बैठि मयंका, छबि छाई ।।
सिय तद्रूपा, बाल स्वरूपा, रहस अनूपा, अबिनासी।
धाई सुनि दासी, जे प्रिय खासी, महल उपासी सुखरासी ।।
तजि-तजि निज काजैं, मंगल साजैं, नौबत बाजैं, रसरासी।
लखि बिबुध सुहरसै, कुसुम सुबरसै, चहुँ श्रुतिसरसैंगुनरासी।।
जय-जय करि बन्दैं, जय रस कन्दै, परमानन्दैं, मुनि-ज्ञानी।
श्रीचन्द्रकला की, झलक झला की, झाँकी-झाँकी झक आनी ।।
'मधुरी' श्रुति सोधी, कहै सो को धी, पुण्य पयोधी, नृपरानी।
यह स्तव करहीं, ते सिय लहहीं, पिय रस चखहीं, मनमानी।।

दोहा—श्यामा श्याम स्वतन्त्र नित, रहस मन्त्र के हेतु।
आई तिलक सुपुण्य थल, रसिक जनन जस केतु ।।
वारि--वारि जल पान करि, राई लोन उतारि।
सर्वेश्वरी सुबाल छबि, लखि जननी बलिहारि ।।
चन्द्रप्रभा नृप भानु की, सुकृत रूप तनु धारि।
प्रगटी मनु मिथिला महल, भइ 'मधुरी' अनुहारि ।।
मणिमय महल बिचित्र अति, चन्द्रभानु के धाम।
तामें चन्द्रकला छयो, शीतलता बिश्राम ।।
मिथिलापति सुनि सुख भयो, छठी सभा के माहिं।
प्रिय भ्रातहिं संतान की, रही बासना नाहिं ।।

बजत बधाई छठी की, जन्म बधाई आज ।
आये नृप अनुराग युत, मुनि–गन ज्ञात समाज ।।
देत दान नृप राजमणि, जात कर्म निज हाथ ।
किये दिये सुख बन्धु को, सब बिधि भये सनाथ ।।
कहत जोरि कर मृदु बचन, सुनिये नृप मणिराज ।
पराशक्ति अह्लादिनी, शक्तिन के सिरताज ।।
नैमिषार थल तप किये, तहाँ लही बरदान ।
तहाँ साथ ही हमहु कछु, तप करि लहि सनमान ।।
तेहि ते तिनकी सहचरी, मेरे गृह अवतार ।
याज्ञवल्क्य हँसि करि कह्यो, सत्य गिरा निरधार ।।
षष्ट अष्ट षोऽश सखी, दल प्रति सेवति ताहि ।
षष्टहिं महँ यह मुख्य गनि, ताते षष्टी माहि ।।
प्रगट भई छइ चन्द्रगति, चन्द्रकला बर नाम ।
है अनादि ग्रन्थन्हि लही, सुनि नृप मणि सुख धाम ।।
कह्यो बजावहु बाजने, साजि नृत्य सब साज ।
नट मागध गावहि नचहिं, जय नृप मणि महराज ।।
गाय वधाई के पदहिं, आये चारों वेद ।
बड़े गुनिन के बेष धरि, गावत शुचि रस भेद ।।

श्री ललीजू के बरही के बाद के हैं—परिकर्ण

।। श्री किशोरी जी का प्रेम चौपाई ।।

एक दिवस आनन्द भयो भारी।काह कहौं कह्योजात न प्यारी।।
तदपि कहे विनु रह्यो न जाई । बढ़्यो सुहृदय बेगि उमड़ाई।।

चहुँदिशि अली सखी गण जोहैं । मध्य सुनैना रानी सोहैं ॥
लेत मोद भरि गोद सुता को । करत पान मुख-चन्द्र सुधाको॥
ताहि समय सिय मचलि परी है।पय प्यावत नहिं पान करीहै।
रोवति अतिसय करि किलकारी।सुता देखि दुख भइअतिभारी
दासी भेजि शतानन्द आये । रानी गिरि तब चरण में जाये ॥
बहुत दिवस में सुता अस पाई।कौन अभागिन दृष्टि लगाई ॥
छिनक विलम्ब विचारि कियो जब।आयो हृदयबातफुरिअसतब
सुता श्री चन्द्रप्रभा घर जाई। प्रीति दुहूँ की अनादि है माई॥
इतउत की दोउ प्रीति एक जस। दसा दुहुँन की भई एक रस॥
चाहत हैं एक संग मिलन को । ताते करो संयोग दुहुँन को ॥
इतने में एक दासि दौड़ि कै । आइ सुनाइ दशा सब रोइकै ॥
मिलि दोउ रानी एक संग बैठीं।सिया ललकि उत गोदमेंपैठीं॥
चन्द्रप्रभा दोउ सुता गोद भरि। भयो मोद को सकै लेख करि॥
मिलि दोउ प्यारी करि किलकारी।लिपटि गई दोउ भुजापसारी
देखि कै चंद्रप्रभा सुख भूलैं । सावन घनमयूरलौं फूलैं ॥

॥ श्री चारुशीला जी का प्रागट्य ॥

दोहा—नखत चित्रा लग्न धनु, शुभ मुहूर्त ग्रह योग ।
माधव पूनो भौम दिन, दून सुखी पुर—लोग ॥
शत्रुजीत दम्पति महल, भयो सुदिब्य प्रकास ।
चारुशिला श्री सिय सखी, प्रगटी भयो हुलास ॥
चन्द्रकान्ति की कुक्षि से, शिशु तनु धर्यो स्वरूप ।
वात्सल्य रस आय जनु, सुकृत सुरानी भूप ॥

सखी सदा की सेविका, सीता अंश सुरूप ।
जन्मी बहु निमि बंश में, तिन महँ युगल अनूप ।।
सीय जन्म के समय से, षट सुमाह परयन्त ।
राज सदन परिवार महँ, पूत्रि बहुत प्रगटन्त ।।

—: बधाई पद :—

बधाई बाजै हो मन हरनी ।।
मिथिलापुर में मंगल घर घर, सुख शोभा को बरनी ।
लघु भ्रात श्री मिथिला पति के, शत्रुजीत सुठि करनी ।।
सम कुल रूप सकल गुन की निधि, चन्द्र कीर्ति तासु धरनी ।।
ताकी कूष प्रगट कन्या भइ, छबि शोभा की धरनी ।।
जनकलली जू की सुख द्रुम लतिका, नाना मुद फल फरनी ।।
'रसिका' लघु भगनी है ताकी, सिय पद रज अनुसरनी ।।

—: बाल बिनोद :—

विमल सेज राजती सुनयना, विमल सिया शिशु गोद लिये ।
एकटक सिय मुख चन्द विलोकति,लोचन विमलचकोरकिये।।
कबहुँ सैन करि दूध पिलावति, कबहुँ के लावति चूमि हिये ।।
बाल चरित गावति प्रमुदित मन, छकि रहि नेह पियूष पिये।।
प्रेम मगन मन दिन अरुराती।जाहि पलक सम सुखसरसाती।।
कबहुँ पालने कबहुँ उछंगा । मातु मल्हावहिं प्रीति अभंगा ।।
बाल चरित गावति दुलरावति।कबहुँ पौढ़ि पयपानकरावति।।
कबहुँ घुनघुना वाद्य मनोहर । सरस मंद नादति सिय सुखकर
किलकति हँसति सिय सुखदानी।उछरति हृदय अमित हरषानी

लक्ष्मीनिधि जब आइ दुलारैं। सिय महा मन मोद प्रसारैं ॥

दोहा—यहि विधि नगर आनन्द महँ, वीत्यो पंचम मास।
लाग्यो छठवाँ मास पुनि, अति हुलास रनिवास ॥

—: अन्नप्रासन विधि :—

एक दिवस नरनाह तब, गुरु मन्दिर महँ जाइ।
गुरु पद पंकज परसि कै, बार बार शिर नाइ ॥
बोले बचन विनीत ह्वै, सुनिये देव दयाल।
अब आयो कुँवरिन सकल, अन्न प्राशनी काल ॥
यथा उचित तस कीजिये, करि लीजिये बिचार।
मंत्रिन आयसु दीजिये, करन हेतु उपचार ॥

—: छन्द चौबोला :—

सतानन्द सुनि हुलसि कह्यो हिय भले कह्यो महराजा।
चारि कुमारि अन्न को प्राशन, करवावहु कृत काजा ॥
अस कहि शुभ दिन शोधि सतानन्द तुरत सुमन्त्रि बुलायो।
कार्तिक मास तिथी द्वादशि को, दिवस सुसुखद सुनायो ॥
बगरि गई यह मोदमयी सब खवरि जनकपुर माहीं।
नृप कुँवरिन की अन्न प्राशनी होति द्वादशी काहीं ॥
नगर नारि नर अति आनन्दित, यथा विभव जिन केरैं।
लगे बनावन बाल विभूषण हीरा हेम रतन घनेरे ॥
सुनि कुँवरिन की अन्नप्राशनी, भरि उमंग अनुरागीं।
पृथक पृथक विदेह महरानी, साज सजावन लागीं ॥
घर घर तोरण विमल पताके, कञ्चन कुंभ धराये।

क्रमुक रंभ के खंभ विराजत पथ जल सुरभि सिंचाये ॥
आइ गई द्वादशी हुलासिन, अन्नप्राशनी वाली ।
खर भर माच्यौ सुजनकपुर चलीं सकल जुरि आली ॥
दो०–उठि प्रभात नरनाह तब, सहित उछाह नहाय ।
नित्य कृत्य निरबाहि सब, जावक चरण दिवाय ॥

–ः छंद चौवोला :–

गावहिं मंगल गीत प्रीत भरि कनक कुंभ शिर धारे ।
कोउ दधि दूब हरदि अक्षत भरि चली कनक कर थारे ॥
यहि विधि परिकर सह सब आये अति हुलास महिपाला ।
सब कुँवरिन को देखि देखि के रानी होहिं निहाला ॥
बद्रीनारायण के मंदिर में पहुँचे सहित भुआला ।
वंदन करि पुनि दैं परदक्षिण वैठे सब खुशियाला ॥
विविधभाँति बाजन तहँ बाजैं सुर सुमन न झरि लाये ।
गायक नर्तक गावत नाचत कौतुक कला देखाये ॥
तव मंत्रिन कहँ वोलि महीपति शासन दियो सुनाई ।
निमिवंशिन कहँ वेगि वुलावहु सादर नेवत पठाई ॥
कियो महीपति कुलदेवा को पूजन सकल प्रकारा ।
वार वार वंदन करि शिरसों, करि स्तुति वहु वारा ॥
चारि कुँवारिन के करते तहुँ नेउछावरि करवाई ।
वोलि परम परवीन सुवारन वहु व्यञ्जन मँगवाई ॥
वद्री नारायण आगे सब थारन पुरट भराई ।
सतानन्द तहँ बद्रीनाथ कहँ दियो निवेद लगाई ॥

दोहा:—मन रञ्जन गंजन सुरुचि वहु विधिवने विरंजु।
पय प्रकाँर वहु भाँति के, कलित मसाले मंजु ॥

—: छंद चौवोला :—

दधि प्रकार ओदन प्रकार वहु, तिमि कृसरान्न परकारा।
मृदु मिष्टान्न प्रकार अनेकन, सुधा स्वाद सुख सारा ॥
विविध वटी वट फल प्रकार वहु पूरी पूप सुहाये।
तिमि प्रकार आचारन के वहु, षटरस रुचिर मिलाये ॥
चारि भाँति के परम मनोहर औरहु सब पकवाना।
सुरभित सलिल अनेक भाँति के, सूपकार मतिमाना।
यथा योग्य निमिवंशिन परुसे भृत्यन कहँ तिमि दीने।
औरहु साधुन विप्रन कोतहँ परुसे परम प्रवीने ॥
भोजन प्रथम सन्त सब कीन्हे पुनि द्विज वृन्द जेवाँये।
दै दक्षिणा भूपमणि निज कर पुनि सादर सिर नाये ॥
पाय अशीश महीश शीश धरि सतानन्द ढिग जाई।
गुरु के अंक कुमारिन को तहँ बैठाये सिर नाई ॥
बद्रीनाथ की लै प्रसाद मुनि सीतहिं दियो खवाई।
बहुरि खवायो तिहुँ कुँवरिन कँह रहेउ अनँद सुख छाई॥
मुनि कह सुनहु महीप शिरोमणि लै निज अंक कुमारी।
करहु अन्नप्राशनी पाणि निज जैसी रीति तुम्हारी ॥
पढ़न लगे स्वस्तयन सतानँद गाइ उठी सब नारी।
लै नरनाथ अंक सीतहि को बद्रीनाथ सम्हारी ॥

तनक तनक सिगरे सुख ब्यंजन ललहिं खवावन लागे ।
ललि बिधु बदन निरखि हिय आनन्द पुलकि परम अनुरागे ।।
दोहा--जो षटरस नव रस स्वरस, रस अनरस मय देव ।
ताहि चटावत षटरसन, धन्य धन्य नर सेव ।।
चारि कुमारिन की करी, अन्नप्राशनी भूप ।
पुनि निमि वंशिन के सहित भोजन कियो अनूप ।।

--: बाल विनोद :--

दोहा--मातु पिता आनन्द में, फूले नहीं समायँ ।
झुलवत ललि को प्रेम सों, वारि वारि बलि जायँ ।।
श्री जनकललीजू झूलत पलना मातु सुनैना झुलावैं ।
चकई लट्टू और फिरकिनी अपने हाथ खेलावैं ।।
ललिया कहत अब निदिया कबहुक मृदु स्वर गावैं ।
पीत झीन झिगुली पहिरावति फूलन शीश सजावैं ।।
मन्द मन्द गति झुलावति पलना निरखि निरखि सुख पावैं ।
लखि लखि विहँसति पलना माहीं हरसि हरसि दुलरावैं ।।
पलना झूलत राजदुलारी मातु सुनैना मोद भरी ।
जनकलली की प्रमुख सहचरी सिया की प्राण अधारी ।।
निज शिशु छबि मणि जड़ित पालनहिं निरषत बारम्बारी ।
किलकति उछरति मुसकावति अति मगन होत महँतारी ।।
लखि लखि पितु निज भाग्य सराहत, मातु बजावति तारी ।
कबहुँ मातु पितु संग मिलि झुलवत कबहुँ जात बलिहारी ।।
छन्द--पुनि पुनि दुलरावै मातु खेलावै अंक लगावै हिय लाई ।

तन गौर सुहाई सुधा लजाई अमित जोन्हाई शरमाई ।।
अंचल तर झाँकी तड़ित प्रभा की जनु धन ढाँकी रमकाई
जनु विधु के अङ्का विगत कलंका बैठि मयंका छबि छाई
जनकलली निज अंकहिं लीन्हें,चूमत बदन सनेह भरी।
ललिया कहि कहि हिय में ल्यावति,अतिसय मोदआनंदभरी
कबहुँ चिबुकपरकरकमलनधरि,मंगलचाहकरतिहियमेंधरी
कबहूँ छबि लखि लेति बलैया,पुनि पुनि हर्ष अपनपौवारी

—: बाल लीला :—

अति सनेह राजा ढिग राखी।पुनि कुँअरिन ल्याई अभिलाषी।।
सब कुँअरिन चौकी पर राजैं । भूषण सकल अङ्गमृदु भ्राजैं ।।
नयन बनज महँ अञ्जन सोहैं।वरणौ छबि असमति कवि कोहैं।।
किलकि सिया राजा कि गोद में।गईं मगन पितु भली मोद में।।
तप्त हेम इव तन दुति अलकैं।पग नूपुर धनि सुनि सुनि पुलकैं।
पुनि उर्मिला सिया ढिग आईं।सिय पितु कन्ध बैठि किलकाईं।।
राजा कर सिर धरे बिराजैं। ताहि समय कोटिन छबि छाजैं ।।
बहुरि उर्मिला उर लपटानी । किलकति कहतीं तोतरि बानी।।
कबहि गोद लै आँगन आवति । कंठ लाइ चुम्बति हलरावति ।।
कबहुँ चलावति आंगन माहीं।चलत-फिरत किलकत मुसकाहीं।।
कभी घुनघुना दै दुलारती । किलकि बजावति सो मन भावती।।
राय मुनी कि यूथ इक आई । देखत मधुर उड़ात सुहाई ।।
बोलत मधुर-मधुर मन हरणी।चलत उड़त विचरत मणि धरणी
तिन्हकहँनिरखिकुंवरिसबकिलके।पकरनचलहिं घुटुरु निमिलिके

कोई आगे पीछे चलि जाही। काहू ते नहिं लाल धराहीं ।।
लड़त लाल लखि डरि फिरि आवइ।जननिचूमिमुखकंठलगावहिं
दोहा–जनक महल की रानि सब, निरखहिं होत सनाथ ।
क्षण-क्षण परमानन्द में, मगन कहति गुण गाथ ।।
बोली जनकलली सुकुमारी।जननी निरखि-निरखि बलिहारी।।
बोलति मधुर सुहावन मनहर । द्वै-द्वै दशन परम सुख आकर ।।
नैन सजल करि भूख जनाई । मातु गोद लै दूध पिलाई ।।
बहुरि उतरि भागइँ अँगनाई । मातु मधुर कहि लेत बोलाई ।।

श्री माता जी के साथ भोजन करना

दधि ओदन मणि को पर आई । माता निज कर देति खवाई ।।
कबहुँ छीनकर निज कर पावति।कछुक खातिकछुमुखलपटावति
सकल कुंवरि ओदन दधि खाई । बहुरि मातु मुख देत धोवाई ।।
किलकि दौरि गोदन में आवहिं।मुख ते पुनि स्वरविमलबजावहिं
पुर नारी सब दिन प्रति आवहिं।देखि बाल सियछबिसुख पावहिं
करहिं प्रशंसा दम्पति भागा।क्षण-क्षण मगन होहिं अनुरागा ।।
दोहा–कबहुँ अपर रानी जनक, सिय की छबि लखि नारि ।
गोद लेति चूमति अधर, बार–बार बलिहारि ।।
पगनूपुर बाजत रहत, छण छण अतिहिं अनूप ।
परम मनोहर शब्द तेहि, सब रागिनि को रूप ।।
छोट अनुज महराज के, जिन्हको कुशध्वज नाम ।
तिन्हकी द्वै कन्या विमल, एक गौर इक श्याम ।।
प्रथम गौर सौ माण्डवी, नख–शिख शोभा ऐन ।
श्रुति कीरति सो श्याम द्वै, ज्यहि छबि कहत बनैन ।।

यह सब कन्या एक संग, रहति सदा आनन्द ।
खेलति प्रीति परस्पर देखिए, दिन दिन बढ़त मृदुचंद ॥
कबहुँ कुशध्वज के महल, जदपि करत बहु खेल ।
कबहुँ खेलत सखिन्ह संग, करति रहत अति मेल ॥
कबहूँ खेलत गोद में, कबहूँ रानिन के संग ।
कबहूँ झूलत पालने, हिय में अधिक उमंग ॥

सवैया-करिश्रृंगार निरखति नयनन भरि, जननी सकल तृणतोरी
छम-छम चलति अरति पुनि दौरति, मणि प्रतिबिम्ब गहोरी ॥
निरखति छबि प्रतिबिम्ब एक रस, उर आनन्द भरोरी ।
पुनि तेहिं ते बतलात बात मृदु, भइ जिमि चन्द चकोरी ॥
हँसति हँसावति अति मन भावति, बढ़ि छबि सिन्धु हलोरी ।
यहि विधि बाल बिनोद करत सब, हंसत परस्पर टकनटकोरी

दिवस एक सब सहित समाजा। महलांगन श्रीजनक बिराजा ॥
चौकी मंच चतुर्दिश राजे । तेहि पर सब रनिवास बिराजे ॥
मध्य जो चौकी मंच सुहाई । तापर बैठ जनक हरषाई ॥
सकल कुआँरिन रानिके गोदा। अँगणित भाँति बढ़ावतिमोदा ॥
शरद निशा पुनि सोम सुहावन । पूरण कला उदय मनभावन ॥
ताहि समय सीता मन आई । चरित विशेष करौं सुखदाई ॥

छं०-लड़ैती मोरी बालकौतुककरति, निरखिमातुसुमोदमनभरति
कबहुँ तुरंग मतंग चुचकारति, कबहुँ तुरंग विहंगन धारति ।
कबहुँ पकरि कर ठुमक ठुमक चलती मोद मातुमनमधुरीभरति
किलकि किलकि आंगन विचरत। निजछविछाँहविलोकतिडरति

सादर सुमुखि निहारि लली मुख, जनराज नृप लेत सुकइयां ।
गौर सरोज बदन अति शोभित,मनहुँ चन्द्र अवतरेउ धरनियाँ।।
मन्द हँसनि मुख चन्द्र विराजत,निरखत लाजत चंद्र किरनियाँ।
चंचल चपल लोल लोचन अलि,चोरति चितहिचारुचितवनियाँ
मैया जगावति जागो मेरी राजदुलारी कहि कहि प्यारी ।
बैठी जनक दुलारी सुख सर्बस किलकत निरखि प्रमोद भरी ।।
जागहुँ समय भयो क्रीड़न की, आय जुरी सखी सारी ।
चुम्वति नयन कमल कर कंजनि, विशद मयंक मझारी ।
बहु विधि गाय मल्हाइ मधुर स्वर लेति सुभुज अंकवारी ।।
दोहा—कब चलिहहु तुम पगन ते, मणि आँगन के माह ।
चहुँदिशि मणिमय झलकहीं, अतिहि छबीली छाह ।।
सो अभिलाष रानी के, मन में क्षण क्षण होत ।
बरणै को वह प्रेम को, पल पल नेह निशोत ।।
करि सिंगार निरखति नयनन भरी, जननि सकल तृण तोरी ।
क्षमक्षम चलति अरति पुनि दौरति मणि प्रतिबिम्ब गहोरी ।।
निरखत छवि प्रतिबिम्ब एकरस, उर आनन्द भरोरी ।
पुनि तेहि ते बतलाति बात मृदु, भई मृदु चन्द्र चकोरी ।।
हँसति हँसावति अति मन भावति, बढ़ि छबि सिन्धु हलोरी ।
यहि बिधि बाल बिनोद करति सब,हँसति परस्पर मुख मोरी ।।
मातु सुनैना बहु दुलरावै । चन्द्र कला को वेगि बुलावै।।
रतन खेलौना अमित मँगावैं । जा बिनु खेलब भाव न भावै ।।
शिशु पन ते निज हित पहिचानी।खेलति संग खाति एक थारी।।

पल वियोगसिय बिनुदु:खरूपा।रुचिलखिखेल करहिंअनुकूला।।
घुटुरुवन धावति राज दुलारी,निरखि मातु सुता मोदभारी ।।
कटि किंकिणी करकंकन बाजत,पग नूपुरधुनिमिलि सुखकारी।
मनहु अलौकिक नाँद त्रिवेणी विहरण मणिमयमहल मँझारी।
जबहिंविहँसिकिलकतिछिनहिंछिन,दसनकान्तिदमकतिदुतिकारी
मानहुँ दामिनि मगनगगनतजि, ललीअधरविलसतिछविधारी।
गगनचन्द्रकीकला मलिनभई, अवनि लाड़लीलखिलखिप्यारी।
कबहुँक ठुमकचलतिआँगन बिच,कवहुँकलरखराति सुकुकारी।
दौरि मातु लै अंक भरति तब, मुख चूमति लेती बलिहारी।

पगन कब, चलिहो राजदुलारी, लड़ैती सिया प्यारी।
ठुमुक ठुमुक कव मणि आँगन में पग धरिहौ सुकुमारी।
कब सुनिहौं तव बोल तोतरे श्रवण सुखद किलकारी।
कवहिं निरखिहौं इन नैनन ते,क्रीड़ा सखिन मँझारी।
कवहिं मातु कहि मोहि टेरिहौ, पूजहि आस हमारी।
जननि निरखि मुख लाड़ैतीजू को,कहति लेति बलिहारी।

दो०-प्रथम वर्ष वय मे सिया, बाल विनोद जु कीन।
बरनहिं ते क्रमतै कछुक, सुनि मुद लहै प्रवीन ।।

एक संग भगिनी मिलि खेली। रही निकट किहिनाम सहेली।।
अनुदिन तन नूतन दुति होई।उपमा खोज न त्रिभुवन कोई।।
कथन न पाइ सुनैना रानी। पूरन काम भई सुख मानी।।
गोदिहिं लै चुम्बहिं दुलारती।चुटकी धुनि सुनिसुनि किलकाती
कबहुँ किलकि मातन्ह ढिग जाहीं।आवहिं कबहुँ सुकान्तीपाहीं

कबहुँ नराधिय कहँ ते देहीं । जनक सप्रीति अंक धरि लेहीं ।।
निज मंदिर सिया महतारी।लाड़ ल्यावत आली महँ पारी ।।
सरद चन्द ते अधिक लोनाई। चूमत बदन सुग्रीव नवाई ।।
कदली तुल्य जंघन युग जोरी। बैठारत घुटिरिन तृण तोरी।।
राख पिष्ट पर बाम सुपाना । साधे रहत महामति माना ।।
चिब्वुक पर अंगुलिन लगाई । विहँसावत करकै निपुनाई ।।
दृष्टि मिलाइ बदन दुति देखी।हँसत प्रसन्न भाग बड़ लेखी ।।
ऊपर अंचल डार महरानी । लगत पियावन पय मुदसानी ।।
दो०-ऐसे निसिदिन मोद मैं, जानै जात न दिन रात ।
अंतहपुर वासिन सबै, परिकर देख सिहात ।।
कीड़त महिजा मुदित सु तैसौं। दृढ़ कर पकरत मृदुलमुठीसौ।।
वटिका द्वै बजावत माई । जेहि मेरुन झुन धुनि अति भाई ।।
लघु परयंक कबहु पौढ़ावै । सुरभित चंपक तेल लगावै ।।
मृग सावक सदृग मन रंजन । तिन मैं जननि लगावतिअंजन।।
दृष्टि दोषनहिं करहिं प्रचारा।असमसिविन्दु रचहिकरप्यारा।।
कबहूँलखिप्रेतिबिम्बन नाचति।कवहूँचलिचलिगिरिमुसुकावति।।
विहंगराज की चोंच समाना। शुभ सुढार नासा छबिवाना ।।
दुइ दुइ दसन अधर अरु नारे। माल तिलक कोवर ने पारो ।।
सुन्दर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला।।
चिक्कन कचकुँचित गभुआरे वहु प्रकार रचि मातु सँवारे ।
पीतझगुलिया तनुपहिराई सौजानु पानि विचरनि मोहिभाई।।
अरुण अधर वर सोहत तैसो।विद्रुम द्युति बिम्बाफल कैसो ।।

चिबुक समत्व न लहत रसाला।लसत कंवु सो कंठ विसाला॥
दो०-जथा उचित सुचि सोहते,रुचिर अंगप्रति अंग ।
कर पद कोमल कमल से, अमल प्रकास अभंग ॥
सिय प्रकास कारन अनुरागा।खीजहिं दृष्टि दोष अनुलागा॥
जंत्र मंत्र तोटक विधि ठाई। लवन मिलाइ उतारहिं राई॥
बोलत किलकत देख कुमारी।रहैंसुचित लखिलखि महतारी॥
तनक अनमनी जौं अनुमानै।नहि तिनके मन रहत ठिकानै॥
सीता दरसन कै मुद छाये। इक दिन सतानन्द मुनि आये॥
खबर पाइ देवरानी भागी। उपरोहित के पाइन लागी॥
यथा उचित विधिकर सनमानी।बोली परम चतुर मृदु बानी॥
नाथ तुमार अनुग्रह पाई। भयौ तोष इन कन्या पाई॥
बाल रोग दृग दोष न होई।पुतनादिक नहिं बासहि कोई॥
सुखित रहैं नित मान सनेहू। अस कछु जतन आप करिदेहू॥
गुटिका चार पवित्र बनाये। चारहुँ कन्यन को पहिराये॥
मातन के उर हुब विश्वासा।दीन्हे विविध दान हूलासा॥
दो०-रक्षामिस मुनि सवनके, कर मस्तक अभिराम ।
पाय भूरि पूजा विपुल, गये मुदित निज धाम ॥
सीतहिं कबहु सुनैना रानी। लै पौढ़ति मणि पलंग सयानी
दूध पियावत हृदय लगाई। निरखत मृदुमुख की मधुराई॥
नानाचित्र लखततिहि थाना।मुकता झालरकेविविधखेलौना॥
अधकट आखर निकसहि सोई। सुनै तिनहि सबको सुखहोई॥
निसि के समय दीपगन देखी।निमिजा अलिन सनेह विशेषी॥

उजियारौ लखि किलकन लागैं। जननी तै अगता पुनि जागैं।।
वाही समय महाछवि छाई। धाई बसुमतितिहिं पल आई ।।
दूरहि तैं सीता पहिचानी। लेहि मोहिं इच्छा चित आनी ।।
नृपति अंक ते उतर सुखारी। किलकि किलकि अतिकरनपसारी
हँसी बसुमति धाइ पुनीता। लई तुरत कनिया महँ सीता ।।
बाक् बिलासन कर लइ ल्याई। गई सदन ते कंठ लगाई ।।
दोहा-जाल रंध्र ह्वै गमन लखि करत कछु बतरावत् ।
सुनत सुनैना ढिग परी, कल वल तोतरे बात ।।
बयवत रुचिर वस्त्र पहिराये। बाल बिभूषण मणिन सजाये ।।
प्यार गोद पयपान करावा। किंचित मधुर सुअन्न खवावा ।।
कबहुँ रतन पलना पौढ़ाई। धाय झुलावत गीतन गाई ।।
अपने बहु प्रतिबिम्ब निहारी। किलकत कलवल बचनउचारी।।
राज सुता अरु राजकुमारी। सम वय कोउ अधिक वय वारी।।
लिये बिबिध क्रीड़ा मुद सानी। खेलैं राजसदन में आनी ।।
कबहुँ रोवत जननी मुख जोवत।पय पियति पियावत महतारी।।
साँझ समय भूपति निज आवत। सुखी होत लली मुख जोहत ।।
अंक उठावत ललिहि दुलारत।अपने को अति बड़ धन मानत ।।
दोहा-एक समय पय पान की, बिलम भई बश काम ।
पद को अंगूठो निज मुखै, मेलि लियो तेहि ठाम ।।
आवै कै कर चरण चलावैं। कंठ उठावत नहिं उठ पावैं ।।
चितवत लम्बी धाय सुजाना। देहिं उतारी सिय तेहि थाना ।।
जानु पानि रींगत लखि जैसे। रींगत आपुन तिनके अनुतैसे ।।

उर्मिलादि भगिनी इहि मैले। रींगत घुटुरुवन सौतिमि ढौलै ।।
पाइन पुरट पैजनि रव होई। मुरकि मुरकि हेरति सुन सोई ।।

(श्री पिता जी के साथ लली जू का भोजन पाना)

मणिमय खचित आँगन माहीं। मोहित होहिं देख परछाहीं ।।
बढ़त होस रींगत तिन माहीं। क्रीड़ा करत लौट कहि जाहीं ।।
बैठहिं कबहुँ घुटुरुवन होई। होड़ी होड़ा विचरहिं सोई ।।
मातु सुनैना निकट बुलावै। जाहिं नयन पुनि शीश हलावै ।।
दोहा–मध्य दिवस भोजन करन, बैठे नृपति विदेह।
बुलवावैं तब कन्यकन, करत दुलारत अति नेह ।।
चारहु सुता थार के पासा। बैठहिं हिलि मिलि सहितहुलासा।।
असन करत जेहि मैं रुचि पाई। ताहि अँगुरिन देहिं बताई ।।
श्रुति कीर्ती कैया महँ लीनै। जाय सू आपु जुहुवत मुद भीनै।।
तेहि अनुचरी श्रीमती दिवरानी।लै उर मिलिहि जात सुखसानी
माण्डवी लै धाय सुभागिनि। चढ़हि महल कौतुक अनुरागिनि
तिन पीछे सचिवन के भामा। लै लै सुता जाहि तेहितेहि धामा
बोलति मृदु बचन न महतारी। है कोऊ निज सखी तुम्हारी ।।
बोलि लेहु निज सखी बुलाई। टेरहिं तब अँगुरिन चलाई ।।
कबहुँ गोद लै आँगन आवति। कंठ लाइ चुम्वति हलरावति ।।
कबहुँ चलावति आँगन माहीं। चलत गिरति किलकतमुसुकाहीं
कबहुँ झुनझुना देति दुलारति।किलकि बजावत मो मन भावति
सकल बहिनि एहि बेर संग हैं। मात-पिता मन अति उमंगहैं।।
उतरी गोद से आँगन ठाढ़ी। चलति-फिरति अद्भुत छबि बाढ़ी

कबहु नाचती मणि अँगनाहीं। लक्ष्मी निधि को मध्यकराहीं।।
सिय नूपुर अति मधुर बजाई।सब कुँअरिन तेहिसुरनमिलाई।।
थेइ थेइ करति किलकि मुसकाई। देव सुमनगंधन झरिलाई।।
अति अद्‌भुत गति कुँअरि बजाई। देव नटी सब गई लजाई।।
छबिदीपति चहुँदिशि अँगनाई।रानि रायलखि गयउ बिकाई।।
महली सब प्रमुदित भइ मनमें।लखिछबिगति पुलकावलितनमें
तब सीता प्राची दिशि देखी।विमलचन्द कहँ आँगन पेखी।।
जननी सन बोलति सुखदाई। एक बात माँ देहु बताई।।
नभमें उगेउ सी को है मैया।अति छबिराजत अतिसुखदइया।।
मइया हँसि कह नभ को राजा।सब उड़गनएक चन्द्रबिराजा।।
बोली सीता प्रेम बढ़ाई। मातु चन्द्र मोहि देहु मँगाई।।
मइया बोली चन्द्र अकाशा। आवै कैसे तुम्हरे पासा।।
हठ करि माँगत जनकदुलारी।मइया देहु चन्द मोहिं प्यारी।।
ठुमुकि-ठुमुकि पटकतिपगुधरणी।नूपुर बजति महाधुनिकरणी।।
नूपुर धुनि सुनि राजा रानी। पुलक गात नैनन झरै पानी।।
परमानन्द कहै को गाई। शारद शेष न बुद्धि समाई।।
चन्द्र खिलौना माँगति सीता। धीर न धरति भईं विपरीता।।
भूमिआकाशमाय मुखनिरखति।अद्‌भुतभावन कोरसबरषति।।
भूमहिं निरखिति चिन्ता माहीं। चाहति हैं सो पावति नाहीं।।
निरखति सिया चन्द्र की ओरा। है कि गयावह चन्द्रचकोरा।।
जननी मुख निरखति रिसिआई।मातु चन्द्र मोहिं देउ मँगाई।।
रिसि भरि-भरि बोलति बहु बानी।जनकरानिमनमँहअनुमानी

दो०—दर्पण तुरत मँगाइ कै, पुत्री आगे कीन्ह ।
मुख सन्मुख दर्पण करी, मुख चन्दहिं लखि लीन ।।
कोटि चन्द्र की छबि हरत, सीता को मुख चन्द ।
तेहि प्रतिबिम्ब निहारि के, भई परम आनन्द ।।
सकल सुता निमि वंश की, सीता दरसन लाग ।
प्रतिदिन सब आवत रहति, क्षण क्षण नवअनुराग ।
अमित खेलौना संग में ल्यावति किंकरी तासु ।
सबमिलि जनक अजीरमें, विहरतविविध विलासु ।।
मिटिं वासना चन्द्र की, निज प्रतिबिम्ब निहार ।
रानी सब प्रमुदित भई, बहु विधि बारम्बार ।।
मेवा बहुरि मँगाइ के, सब कुँअरिन कहँ देत ।
निजकर सिय बाँटत सबहि, निरखि मातु सुखलेत ।।
सकल सुख के सींव रति भट कोटि शोभा करनि ।
सहज शुचि नख-शिख सुहावनि माधुरी मन हरनि ।।
चरण कंज प्रफुल्लित निवासति अरुणाता तजि तरनि ।
विमल पद में विमल नुपुर लसत रुनझुन करनि ।।
तप्त कंचन मृदुल तनु अनुहरति भूषन भरनि ।।
लसत कर पद मणि महल आँगह घुटुरुवनि वरनि ।
उर सिन्धु हरषत रंग लखि सिय जनक जू कीघरनि ।।
गोद लै चुम्बिति दुलारति भाव होत अपरनि ।
चुटकि धुनि सुनि नाचती कबहूँ चलीं गिरि अरनि ।
परस्पर खेलाति कुँअरि सब किलकि झुकि पुनि डरनि ।

कबहुँ माता देति झुनझुनी लेति सब दुहुँ करनि ।।
कोइ भौंरा मणि जटित नचावति।घूमति मणिआँगनछबिपावति
देखि-देखि कुंअरी सब हरषै । सुर तरु सुमन देव बहु बरसै ।।
मधु चकई के खेल सुहावनि । कहुँ गोली खेलति मन भावनि ।।
कबहुँ सकल मिलि पलनन झूलैं।जननी निरखि-निरखि मन फूलैं
मधु मेवा जननी तब ल्याई । सकल कुँवरि एक भाँति खवाई ।।
कलधर विविध खेलौना राजैं । पवन प्रसंग नचै अरु नाचै ।।
सो सब खेल करावहिं दासी । आनन्द मगन सकल सुख रासी।।
दोहा–अजिर नभ लगि मनोहर आनन्द,खेलति अनेक विनोद।
चौथ चढ़यो तब कुँवरि सब, अधिक बढ़ावति मोद ।।
चन्द्रकला मन आनन्द भारी । सीता को मुख चन्द निहारी ।।
बोली सुनु मिथिलेश कुमारी । सब मिलि ठाढ़ होउ समधारी ।।
सब कोउ भौंरा देहु घुमाई । देखैं को बड़ि वेर नचाई ।।
चतुर्दिशा सब कुंअरि खड़ी है । मणि भूषण ते अंग जड़ी है ।।
लघु-लघु लहँगा लघु-लघु सारी । कोरिन लगिमणिमोतिनधारी
अरुण पीत हरि असित मनोहर।राजित जरतारिन मय सोहर।।
दोहा–सबको भौंरा घूम के, अस्थिर भो महिं माहिं ।
जस भौंरा सिय को नचो, तस काहू को नाहिं ।।
कवित्त-छोटे–छोटे शीश फूल बेनी में केवी झब्बा छोटी,
माँग टीका छोटी जामें मोती छोटी राजहीं ।
छोटी–छोटी कर्णफूल बन्दी जुगलरी छोटी,
नाक में बुलाकी छोटी अद्भुत बिराजहीं ।।

छोटी-छोटी बाजुबन्ध कंकन पछेली छोटी,
छोटे नवरत्न सों विमल कर छाजहीं।
उर मणिमाल ते भरे हैं कटि किंकिनी सों,
बाजत गंभीर नाद सातों स्वर लाजहीं॥

दोहा—महल के द्वितीय उच्चता, पर सब कुँअरी जात।
खेलति हैं तहँ खेल बहु, सो सुख हिय न समात॥
अमित मणिन रचना रचित, बरनि-बरनि छबि ऐन।
गुड़िया अमित प्रकार की, सो छबि कहत बनैन।
तिन्ह से खेलति मन दिहें, सब कुँअरी एक रीति॥
खेल परस्पर हास्य बहु, सब छल वरजित प्रीति॥

छप्पय-वरकहुँ गुड़ियन के रचित व्याह,सब बिधि अति नीके।
कोइ दुलहिनि दिशि होत कोई दिशि दुल्लहिं हीके॥
राजा-रानी मगन हैं जोइ सिय करु सोइ भावहीं।
अति उत्सव पुर में भये चहुँदिशि मंगल गावहीं॥

जब लगि बाल बरन द्युति प्यारी।चन्द्रकला तेहि तनअनुहारी॥
कन्दुक औ भौंरा यक डोरी।सारो मैना मोर चकोरी॥
तीतर और कपोत कै छौना।पालन करि निज दोउ औ मैना॥
दोउ महलन ते पक्षी ल्यावैं।अपने-अपने खेत देखावैं॥
मुनियाँ लाल पिंजरा ल्याई।दोऊ छोड़हिं हँसि देखि लड़ाई॥
जब जीती प्यारी की मुनियाँ।लहि उर हरषि बचन प्रियसुनियाँ

—: एक समय-श्याम-गौर चन्द्रकलाजु—विवाह :—

तबहीं सोज लही सिय प्यारी।प्रिय सी निहारीनसकी संभारी॥

करि कछु जतन हारि निज भाई।हर्षित मणिगन बहुलुटवाई।।
यद्यपि नात बहिन की पाईं । सो अभिमानहिं प्रीति छपाई ।।
दोहा—यहि विधि के बहु खेल करि, लीला ललित सवारि।
पौगनहूँ लखि कुअरि वर, सेवत स्वामिनी प्यारि ।।
तब सिय जू प्रिय रूप मूरति। श्यामवर्ण सोई सब कीरति ।।
देखी चन्द्रकला तब आई। लखि मूरति आभा दृग छाई ।।
गइ निज महल मातु सो कही । जननी देख दसा सो लही ।।
तब निज भवन रची एक मूरति।सिय जू की जैसीसब सूरति।।
चहुँदिशि विमलादिक सहचरी । चमर विजन सोहै करधरी।।
अपनी रूप रची सुकुमारी। सुन्दरि बीन लीयकर धारी ।।
अपनी कुंज रची एक न्यारी। युथेश्वरि सहचरि बहु प्यारी ।।
फरस लागि पलंगे सुठि सोहे । मुक्ता झालरी चँदवा सोहे ।।
दो०—बहुसामासजि मातु को, तुरत दिखाई आनि ।
चकित व्यथित दोऊ भई, मम गृह आई जानि ।।
जाय कही तब रानि सो, आप लखी सो साज ।
भाय भरी लखि अबररी, भावी भाव बिचार ।।
नैमित्तिक मैं नित्य कि उद्दीपन उर धारि ।
लीलाविग्रह तेकरलीला,दोऊकुँअरि कीव्रतशीला।।
दुहुदिशि वर दुलहिन रचहि, याहीसब बिधि रचिअतिनि के।
कोई दुलहिन दिसि होहीं । कोई वरदिशि दुलहि कोई ।
—: विवाह लीला—विग्रह मूरती—दोनो बहिन रचना :—
चारु शीला विमलादि अनूपा। कमला मदन कला सुखरूपा।।

चन्द्रा चन्द्रवती सुखदानी। चम्पकली रति बरधिन मानी ॥
षष्ट सहस निमि वंशी कन्या। तुरिया तन सेवा रति धन्या ॥
मिथिला शहर महाजन बसहीं। वैश्य वरन सुन्दर तनलसहीं॥
तिनकी नारि उपासक प्यारी। जन्म लियो तहँ बहु सुकुमारी॥
सो सब सियजू की सहचरीं। लखी जाय तहँ चरणन परीं ॥
लखि मूरति सूरति दृग पूरति।कहति किशोरी सोंनहिंजूरति॥
लखी जाय सियजू की मूरति।उपमा की कहुँ मिलयनसूरति॥
तब सब मिलि कहि चन्द्रकलाजू।तुम कीनी अतिभलीभलाजू॥
अब विवाह कीकरो तयारी।हमहूँ सब मिलि करब सँभारी ॥
दो०–तब वशिष्ठ मुनि रूप धरि, विमला जू सरदार।
कमला ठकुरानी भई, शतानन्द छवि सार ॥
भई अवध वासी बहु सखी। जिन पिय की मूरति छविलखी॥
मिथिला वासिन बनी सदाई। निमि वंशिन के सुत समुदाई ॥
और महाजन सुत मन भाये। ते सरयाती बने बनाये ॥
और सखा जे रघुकुल केर। सोइ सखीसखा बहु तेरे ॥
रथ गज बाजि विपुल तेहिमाहीं।कियो बरात घटीकछुनाहीं॥
सजि बरात बरनै को पारा।तेहि विधि कीन्हीं सकलपसारा॥
परिछन साजि अश्व असवारा। गज रथ सजेलहे को पारा ॥
यहि विधि सरियाती तहँ आये। चतुरंगी लखि विसमित भये॥
कहत अवधबासी गुण गाथा। बड़े प्रबल मिथिलापुर नाथा ॥
दो०--परिछन करि जनवासहिं, दिये बास सुखरास।
भोजन की सौजें सकल, पठै दिये नृप पास ॥